RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 3 अंक 8 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

liverajsamand.com

हिन्दी मासिक पत्रिका

जून 2020

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

गांव की आधी रोटी में आनन्द

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

vedanta
transforming elements

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

सह-अस्तित्व
एक बेहतर कल के लिए

- डॉउ जोन्स सस्टेनेबिलिटि इंडेक्स द्वारा धातु एवं खनन क्षेत्र में एशिया पैसिफिक में पहला तथा विश्व स्तर पर पांचवां स्थान
- भारत में 2.41 गुना वाटर पॉजिटिव प्रमाणित कंपनी
- सभी ऑपरेशन्स आईएसओ: 14001 पर्यावरण प्रबन्धन प्रणाली से प्रमाणित
- जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों एवं पर्यावरण फूटप्रिंट को कम करने के लिए प्रतिबद्ध

World's leading integrated Zinc-Lead Producer | Among World's Top 10 integrated Silver Producer

Hindustan Zinc Limited

Yashad Bhawan | Near Swaroop Sagar | Udaipur - 313004 | Rajasthan | India

P : +91 294-6604000-02 | www.hzlindia.com | CIN - L27204RJ1906PLC001208

www.facebook.com/HindustanZinc | www.twitter.com/CEO_HZL | www.twitter.com/Hindustan_Zinc | www.linkedin.com/companyhindustanzinc

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा,
लक्ष्मणसिंह राठौड़
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी
सूर्यप्रकाश दीक्षित
विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा, गणपतसिंह
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 99500-84705

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क मात्र 200 रुपए

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101

सम्पादकीय

कोरोना का कहर : सांसों में जहर

समूचा विश्व आज कोरोना महामारी से त्रस्त और ग्रस्त है। लाखों की संख्या में लोग काल कवलित हुए हैं और यह सिलसिला जारी है। महामारी अभी चरम पर नहीं पहुंची हैं। विशेषज्ञों के अनुसार अगले कुछ माह में अत्यधिक भयानक और वीभत्स दृश्य देखने को मिल सकते हैं। कोई बीमारी यदि वैश्विक स्तर पर फैल जाए तो उसे महामारी कहते हैं। इसका उद्गम स्थल चीन का वुहान नामक शहर है जहां राष्ट्रीय स्तर का वाइरस अनुसंधान केंद्र है। महामारी का कारक एक सूक्ष्म जीवाणु-वायरस है जिसे कोविड-19 नाम दिया गया है। यह वाइरस श्वसन तंत्र के द्वारा एक से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। अधिकतर मामलों में कोई लक्षण नहीं होते अथवा बहुत कम होते हैं,छींक और खांसी आने पर आम तौर पर हमारे हाथ चेहरे तक पहुंच जाते हैं जिससे हाथों पर स्राव के कण लग जाते हैं,यही हाथ फिर किसी सतह जैसे कुर्सी,मेज, मोबाइल, दरवाजे की कुण्डी,बिजली के खटके,पानी की टोंटिया, फ्रीज के हत्थे,एटीएम,दुकानों के काउन्टर आदि को छूते हैं। तदन्तर अन्य व्यक्ति द्वारा इन सतहों को छूने से वाइरस उनके हाथों से होते हुए नाक और मुंह तक पहुंच जाता है,हाथ मिलाने से भी वाइरस के लिए आगे से आगे का रास्ता सुगम होता जाता है। अत: हाथ मिलाने से बचना चाहिए, इस प्रकार संक्रमण की यह प्रक्रिया चलती रहती है और स्वस्थ व्यक्ति रोगी बनते रहते हैं। यह भी पाया गया कि संक्रमण वायु के द्वारा भी फैल सकता है। मास्क और हस्त-प्रक्षालन के साथ बचाव का तीसरा कारगर उपाय है व्यक्ति से व्यक्ति की दूरी, जो कम से कम एक मीटर की होनी चाहिए। इसको सोशल-डिस्टेंसिंग (सामाजिक दूरी)नाम दिया गया है किन्तु वस्तुत: इसका आशय शारीरिक दूरी से है। सोशल-डिस्टेंसिंग शब्द से मन में कई भ्रांतियां उत्पन्न होती हैं इसलिए इसको फिजिकल-डिस्टेंसिंग कहना उचित होगा। लोक-डाउन ने रोग के प्रसार को काफी हद तक कम किया है।

उपरोक्त सावधानियों के अलावा स्वयं की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखना भी आवश्यक है। प्रोटीनयुक्त भोजन, फल -सब्जियों का सेवन तथा प्रचूर मात्रा में पानी पीना चाहिए। नकारात्मक विचारों को मन में घर नहीं करने दें। इस रोग की असरकारक दवा और टीका बनाने के प्रयास जारी हैं। किन्तु चिंता की कोई बात नहीं है अधिकतर रोगी लाक्षणिक उपचार से ठीक हो जाते हैं। संक्रमण की दर को कम करना हमारे हाथ में है। यदि हम ऐसा कर पाए तो मृत्यु दर स्वत: ही कम हो जायेगी। इन बातों को ध्यान में रखते हुए हम निश्चित रूप से इस महामारी पर विजय प्राप्त करने में सफल होंगे। शुभकामनाएं !

स्वच्छ हाथ हथियार हों, अरु मास्क हो ढाल,
तभी बनोगे पार्थ तुम, कोरोना का काल ।।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
पूर्व विभागाध्यक्ष सामुदायिक चिकित्सा विभाग
आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** गांव की आधी रोटी में आनंद — पेज- 4
2. **ऐतिहासिक विरासत :** राजप्रशस्ति महाकाव्य — पेज - 9
3. **व्यंग्य :** देखो 2000 जमाना आ गया — पेज- 12
4. **योग दिवस विशेष :** योग रखता है निरोग — पेज- 13
5. **व्यंग्य :** भटकती ट्रेनें — पेज - 14
6. **तीखी मिर्ची :** कोरोना से एक मुलाकात — पेज - 15
7. **कवर स्टोरी- 2 :** कोरोना - नया रूप लेकर 102 साल पुराना दर्द — पेज - 16
8. **व्यंग्य :** मत्स्यगंधा — पेज - 18
9. **मेरा गांव मेरे लोग :** गणगौर के दो दीवाने (हीरो) — पेज - 20
10. **राजस्थानी केणावतां** — पेज - 22
11. **समसामयिकी और खास खबरें** — पेज - 23
12. **कविता- गजलें :** कोरोना, वर्णन सुन्दरता का — पेज- 24
13. **व्यंग्य :** मुर्गे के आंसू — पेज - 25
14. **हमारी संस्कृति :** भारत की गौरवमयी गुरुकुल परम्परा — पेज - 27
15. **टेक्नोलॉजी विंडो :** 2020-नवीनतम प्रौद्योगिकी रुझान — पेज - 30
16. **व्यंग्य :** ये लेख मत पढ़ना, वरना परेशान हो जाओगे — पेज - 32

कोरोना

इफैक्ट

गांव की आधी रोटी में आनंद

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

कोरोना महामारी के चलते लॉकडाउन से आम जन जीवन में उथल पुथल सी मच गई। रोजगार की तलाश में महानगरों में जा बसे ग्रामीणों के कारण पहले जहां वर्षों से गांवों में कई मकानों पर ताले जड़े हुए थे, वे अब आबाद हो गए हैं। सुनसान घरों के ताले खुल गए हैं। उनमें चहल पहल बढ़ गई है। बंद मकानों के कारण गली- मोहल्लों में पसरा सन्नाटा अब हल्के शोर- शराबे में बदल गया है। अकेले राजसमंद जिले में 70 हजार से ज्यादा प्रवासी राजसमंद लौटे है, जो मुंबई, गुजरात, मध्यप्रदेश, चैन्नई में व्यवसाय या नौकरी के चलते प्रवासरत थे और पूरे राजस्थान में लाखों लोगों ने कोरोना की महामारी के बीच गांवों का रुख किया है। इससे पिछले दो माह में गांवों की रंगत ही तेजी से बदल गई है। जिस तरह वर्षों बाद अपने बेटे से मिलकर मां गदगद हो जाती है, ठीक उसी प्रकार वर्षों प्रवासियों के एक साथ गांव लौटने के बाद समूचे गांव का माहौल भी बड़ा खुशनूमा हो गया है। जहां कोरोना वायरस के संक्रमण को लेकर पूरा विश्व दहशतग्रस्त है, वहीं गांवों की आबोहवा में लोग बचपन की यादों के साथ आनंदमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कुछ लोग अपने बचपन के किस्से- कहानियों के साथ अपने खेतों में घूम रहे हैं, तो कोई कुएं पर सामूहिक रूप से गंठे लगाकर अपनी गर्मी से राहत पा रहे हैं। आनंद में झूमते इन लोगों को देखकर नहीं लगता कि गांवों में किसी भी व्यक्ति को कोरोना महामारी की चिंता सता रही है। इनके जीवन का यह पहला ही मौका है,जब बचपन के सारे मित्र एक साथ गांव लौटे और मिले हैं।

22 मार्च को जनता कर्फ्यू के बाद लॉकडाउन लगने से 31 मई तक बाजार में सभी तरह की दुकानें, घरेलू, लघु व मध्यम से लेकर उच्च श्रेणी तक के सभी उद्योग, फैक्ट्रियां बंद रही। लोगों के घर से बाहर निकलने पर ही प्रतिबंध रहा। इस बीच महानगरों से प्रवासी घर लौटने लग गए। आवागमन के साधनों के अभाव में ज्यादातर श्रमिक पैदल ही घर लौटने के रवाना हो गए, जिन्हें रास्ते में लॉकडाउन के चलते काफी परेशानी भी हुई, लेकिन कुछ समाजसेवी आगे आए, जिन्होंने रास्ते से पैदल गुजरने वाले प्रवासियों के लिए पेयजल व भोजन का प्रबंध भी किया। राजसमंद जिला ही नहीं, बल्कि मेवाड़ शायद ही कोई ऐसा गांव, ढाणी व कस्बा होगा, जहां के लोग महानगरों में न हो। यहां की आबादी का बड़ा हिस्सा व्यापार, नौकरी और रोजगार के सिलसिले में महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडू, तेलंगाना आदि प्रांतों में प्रवास करता है। इस कारण गांवों में कई मकान सूने रहते थे और कुछ मकान खुले भी थे, सिर्फ एक या दो बुजूर्ग ही निवासरत थे। प्रवासियों के लौटने से अब अधिकतर बंद मकान खुल गए हैं।

गांव की आधी रोटी का आनंद

अब गांवों में लोगों के लौटने से वापस रौनक लौट आई, लेकिन वे रोजगार को लेकर जरूर चिंतित है कि क्या करें। क्या यहीं रहकर खेती को बढ़ावा दें या पशुपालन से तरक्की करें ? इस तरह कुछ लोग गांवों में ही स्वरोजगार की तलाश कर रहे हैं और कई लोग अब भी कोरोना संक्रमण की महामारी थमने के बाद वापस लौटने का विचार भी कर रहे हैं, लेकिन मानस वापस लौटने का नहीं है। रोजगार को लेकर कुछ असमंजस की स्थिति भले ही है, मगर ज्यादातर लोग शहर की सुविधापूर्ण आधुनिक जिन्दगी जीने के बाद इस महामारी में मिली परेशानी के बाद अब गांव ही में घर- परिवार के साथ रहकर आधी रोटी में स्वस्थ रहकर आनंद का अहसास कर रहे हैं।

अब गांव में बिता रहे सुकून के पल

बचपन के अपने मित्रों के किस्से व कहानियां महानगरों की भागदौड़ व भीड़ में खो गए थे। अब गांव लौटने के बाद प्रवासियों की खेत-खलिहान, उन पेड़ों की छांव और कुएं पर पहुंचे, तो वे सभी पुरानी यादे पुनर्जीवित हो गई। कोरोना महामारी ने प्रवासियों को अपने गांवों से जुडने का मौका दिया है। शहरों की भागदौड़ भरी जिंदगी छोडकर् वे इन दिनों अपने गांवों में सुकून के पल गुजार रहे हैं। गांव की चौपालों पर भी रौनक लौट आई है, जहां आधी आधी रात तक बैठ कर बतियां रहे हैं।

मनरेगा में बढ़ा नामांकन

शहर में महामारी ने रोजगार छीन लिया, तो कई मजदूर दर दर की ठोकरे खाते हुए गांव लौट आए, लेकिन गांवों में भी सभी के पास खेती नहीं होने व आर्थिक कमजोरी के चलते जून की रोटी का इंतजाम भी मुश्किल हो गया था। ऐसे हालात में प्रवासी मजदूरों को मनरेगा ने सहारा दिया है। इससे 100 दिन तक गारंटी से रोजगार उपलब्ध करवाने वाली केन्द्र सरकार की कल्याणकारी महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार योजना (मनरेगा) में भी एकाएक नामांकन बढ़ गया है। इसके लिए ग्राम पंचायतों द्वारा प्रवासी मजदूरों को अधिकाधिक रोजगार दिलाने के लिए तत्काल जॉब कार्ड बनाने के लिए विशेष शिविर आयोजित किए जा रहे हैं।

बढ़ा व्यापार एवं रोजगार के अवसर

प्रवासियों के गांव लौटने के बाद न सिर्फ गांव व कस्बों की दुकानों का व्यापार बढ़ा है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में नए रोजगार के अवसर भी सृजित होने लगे हैं। कई हुनरबाज प्रवासियों ने गांव में स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ करने का मन बना लिया है। गांव में स्थायी रहने का मन बनाने के कारण ज्यादातर लोग अपने मकानों में सुविधा के लिए आंशिक बदलाव के साथ आमूलचुल परिवर्तन भी करने लगे हैं। पुराने मकानों की रंगाई- पुताई के साथ ही कुछ नए मकान भी बनाने लगे हैं। इससे श्रमिकों के लिए काफी रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं।

बचाव ही उपचार

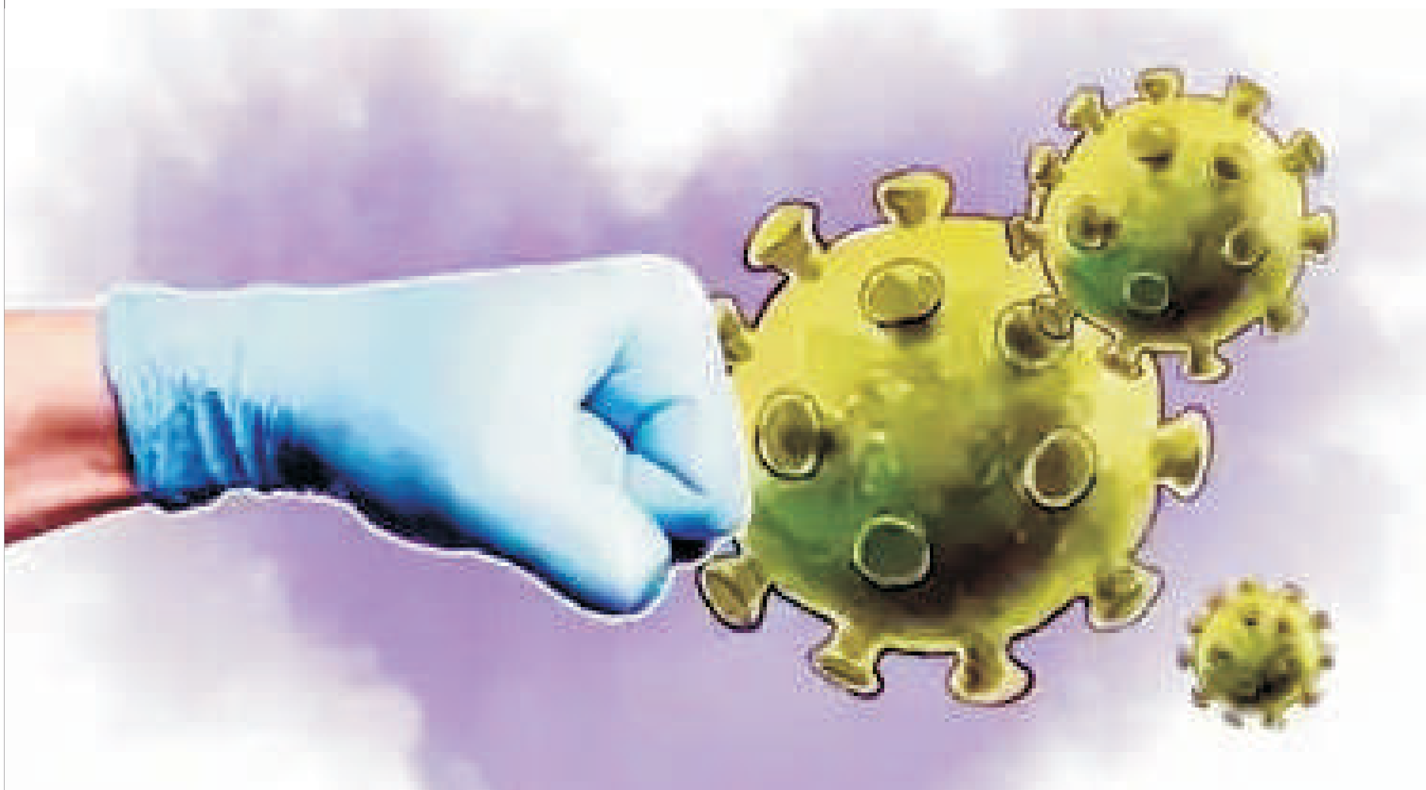

कोरोना वायरस के इलाज के लिए अभी तक दवा की खोज नहीं हो पाई है। ऐसे में इस बीमारी से बचाव ही उपचार है। अपने मुंह पर रुमाल अथवा मास्क का प्रयोग करें। इसके दोहरे लाभ हैं, स्वयं का संक्रमण दूसरे तक और दूसरे का संक्रमण स्वयं तक नहीं पहुंचता। इस प्रकार कोरोना ही नहीं, सांस से संचरित होने वाले सभी तरह के रोगों से भी बचा जा सकता है। मास्क को एक बार बांधने के बाद उसको बार-बार छूने या नाक-मुंह से हटाने का प्रयास नहीं करना चाहिए अन्यथा उसका प्रयोजन ही निष्फल हो जाएगा। घर पर आकर स्नान करके पहने हुए वस्त्रों एवं मास्क को भली-भांति धोकर सुखा लेना चाहिए। कार्य करने के दौरान समय -समय पर हाथों को साबुन, पानी से धोते रहना चाहिए। इसके बजाय 70 प्रतिशत अल्कोहल युक्त सैनेटाइजर का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। यथासंभव हाथों को विभिन्न सतहों से दूर ही रखें। संक्रामक सतहों को छूने के तुरंत पश्चात हाथों को साफ कर लें।

यह रखें सावधानी

कोई भी प्रोडक्ट 100 फीसदी सुरक्षा की गारंटी की बात नहीं कर रहा है। बताया कि कोई भी प्रोडक्ट कंपनी यह नहीं लिखती है कि यह 100 प्रतिशत बैक्टीरिया को मार देंगे या इससे आप शत प्रतिशत सुरक्षित रहेंगे। अभी तक दुनिया में कोई ऐसी रिसर्च नहीं हुई है, जिसमें पता चला हो कि कोई भी प्रोडक्ट कोरोना से आपको कितना सुरक्षित रख सकता है।

देश के लिए अच्छी बात

यहां ड्रॉप्लेट्स वातावरण में 10 से 20 सेकंड में ही खत्म हो जाते हैं। भारत और अमेरिका में तापमान का स्टेटस अलग अलग है। हमारे यहां यदि कोई ड्रॉप्लेट्स वातावरण में आती है, तो वो महज 10 से 20 सेकंड में ही खत्म हो जाती है। जबकि अमेरिका में यह ज्यादा वक्त तक जिंदा रहती है, क्योंकि वहां का तापमान बहुत कम है। इसीलिए भारत में जब तक कोई व्यक्ति किसी इन्फेक्टड व्यक्ति के सीधे संपर्क में नहीं आता, तब तक उसे कोरोना नहीं हो रहा है। बैक्टीरिया और कोरोना का साइज भी अलग अलग है।

मास्क में 15 माइक्रॉन से बड़ा छेद नहीं होना चाहिए

बाजार में आ रहे कॉटन मास्क के बारे में कोई भी मास्क पहने तो सबसे पहले यह जरूर देखें कि उसमें पोर (छेद) 15 माइक्रॉन से बड़ा न हो। यदि इससे बड़ा छेद होगा, तो वायरस अंदर आ सकता है। स्प्रे मशीन भी बहुत बढ़िया चीज है। इससे आप घर में सैनेटाइजेशन अच्छे तरीके से कर सकते हैं। हां, एक बात का जरूर ध्यान रखें कि सैनिटाइजर की क्वालिटी अच्छी होनी चाहिए।

कॉपर और ब्रॉन्ज के बर्तन में खाना ज्यादा सुरक्षित

डब्ल्यूएचओ ने भी माना है कि कॉपर और ब्रॉन्ज पर कोरोना वायरस ज्यादा देर नहीं टिकता। इसलिए हमें खाने पीने के लिए कॉपर और ब्रॉन्ज के सामान इस्तेमाल करने चाहिए।

COVID -19 संक्रमण के दौरान यात्रा करें तो इन बातों पर ध्यान दें

CSIR-CCMB

यात्रा से पहले

अपने गंतव्य पर COVID-19 की स्तिथि को समझें। WHO से जानकारी लें ।

COVID - 19 संक्रमण वाली जगहों पर वृद्धों और डायबिटीज, हृदय और फेंफड़ो की बीमारियों से पीड़ित लोगों को दूर रखें |

यात्रा के दौरान

COVID - 19 संक्रमण वाली जगहों पर जानेवाले सभी यात्री योग्य स्वास्थ्य अधिकारी से परामर्श लें|

नियमित रूप से हाथ धोयें और खांसी - छींकने वाले लोगों से कम से कम एक मीटर दूरी बनाए रखें |

अगर अस्वस्थता अनुभव करें, तो क्या करना चाहिए और किसे संपर्क करना चाहिए, इसकी जानकारी रखें|

यात्रा के पश्चात्

घूमने-फिरने और सामूहिक कार्यक्रमों के विषयों में स्थानीय आधिकारिक निर्देशों का पालन करें|

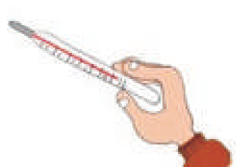

दो हफ्ते तक रोग संबंधी लक्षणों की जाँच करते रहें और दिन में दो बार शरीर का तापमान लें|

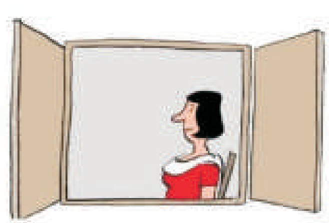

हल्का सा भी बुखार आने या लक्षणों के दिखने की स्थिति में घर पर ही रहें । स्वास्थ्य विभाग को फोन से संपर्क करें और अपनी यात्रा और लक्षणों के विषय में विस्तृत जानकारी दें ।

कोरोना वायरस काल में पनपता डर

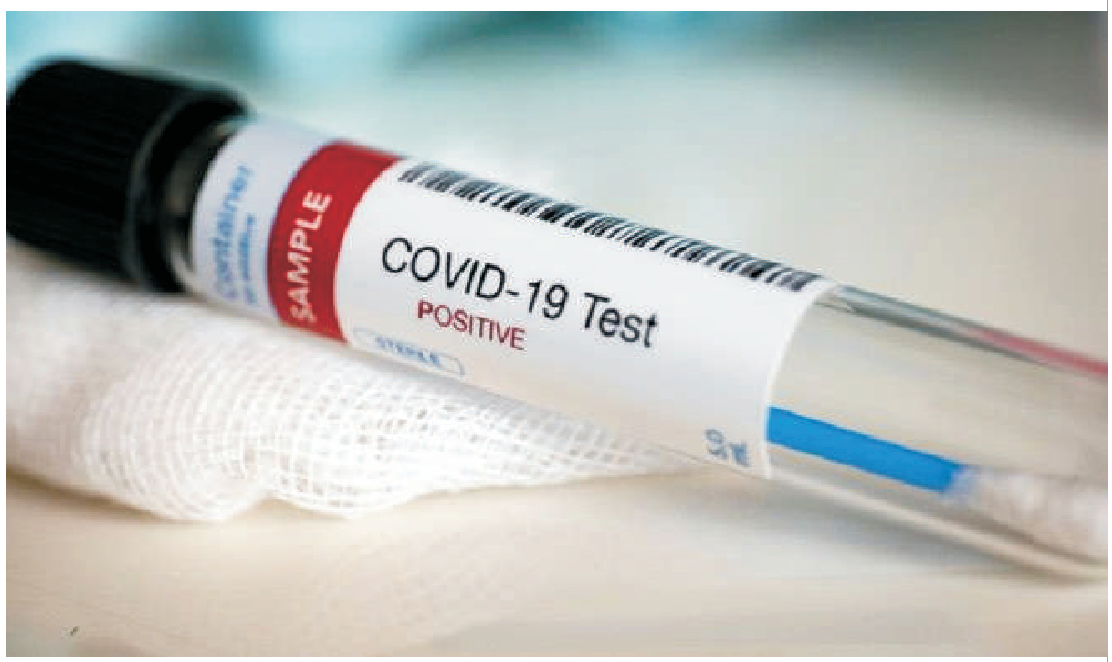

लगभग ढाई माह से देश के लोग लॉकडाउन के बीच अपना समय व्यतीत कर रहे है। हर व्यक्ति अपने घर में किसी ना किसी तरीके से कोरोना के इस संकट के समय इस समय को बिताने का प्रयास कर रहा है, लेकिन ऐसा लग रहा है कि प्रकृति एक अलग सी दिशा की तरफ बढ़ रही है।

12 अप्रैल, 13 अप्रैल और 10 मई को लगातार अलग अलग तीव्रता के भूकंप के झटके महसूस किए गए। तीव्रता ज्यादा हो या कम हो, लेकिन अगर इसका केंद्र धरती में ज्यादा नीचे ना हो और ऊपर हो तो वह अत्यंत भयावह स्थिति सारे भारत के लिए बन सकती है। पिछले एक माह से ना जाने प्रकृति किस विनाश की ओर इशारा कर रही है और बार बार बारिश का औलो के साथ आना। एक अलग ही डर का माहौल पैदा कर रहा है। वहां मौसम विभाग इन सारी परिस्थितियों को सामान्य बताकर ऐसा लग रहा है कि लोगों का मन बहला रहा है। लगातार आ रहे भूकंप और बिन मौसम वाली बरसात से मन को भयभीत करने वाली अवस्था हर व्यक्ति की होती जा रही है। आमतौर पर व्यक्ति जब घर से बाहर जाता था और अपने काम पर लग जाता था तो उसे कभी- कभी आए भूकंप के झटकों का पता भी नहीं चलता था, किंतु घर में रहकर अब वह इन्हें ज्यादा महसूस कर रहा है और स्थिति ऐसी हो गई है कि ना तो घर में रहा जाता है और ना बाहर जा सकता है।

लगातार समाचार चैनलों पर भूकंप, कोरोना, मजदूरों के पलायन की न्यूज तो चलती ही रहती है, वहीं एम्स हॉस्पिटल के निर्देशक डॉ. रणदीप गुलेरिया के एक ताजा बयान के मुताबिक आने वाले माह जून जुलाई में तो कोरोना की स्थिति और भी भयानक होगी। लीजिए लोगों के डर को बढ़ाने में ऐसे लोगों का सहयोग बहुत ही दुखद लगता है।

जहां हर व्यक्ति इन भूकंपो से और बारिश का बिन मौसम ओलो के साथ पड़ने से परेशान हैं, वही भारत का एक बड़ा तबका, हमारा एक आम मजदूर एक जगह रह कर अपना भरण- पोषण नहीं कर पा रहा है। लगभग सभी मजदूर दूर- दूर राज्यों से आकर दिल्ली नोएडा और गुड़गांव जैसे विकसित राज्यों में रहकर अपने घर का और अपना भरण पोषण कर रहे थे, लेकिन कोरोना काल में लगातार उनकी हालत खराब हो रही है। उन्होंने अब बिना अपनी जान की परवाह किए बगैर वापस अपने घर लौटना शुरू कर दिया है।

परिस्थिति कुछ ऐसी हो गई है कि गर्भवती महिलाएं और छोटे- छोटे बच्चे भी लगातार चलने के लिए मजबूर हैं। जहां एक और सभी राज्यों की सरकार सभी मजदूरों के लिए खाने पीने की व्यवस्था का दावा करती हैं। वही मजदूरों की स्थिति लगातार डर के

माहौल के कारण एक जगह ना रुकने की हो गई है और वह जल्दी से चाहते हैं कि किसी तरीके से अपने घर पहुंचे और अगर उन्हें मरना ही है तो अपने घर जाकर मरे।

कोरोना काल के शुरू से ही लगातार लोग 2 गज की दूरी और बार बार हाथ धोते रहने की बातों को मन से निभा रहे है। सभी लोग अपने आसपास के लोगों का और खुद का ख्याल भी रख रहे है। हर व्यक्ति इस बात को पालन कर रहा है, लेकिन जैसे- जैसे दिन आगे बढ़ रहे है। आम आदमी की मनोस्थिति खराब होती जा रही है।

घर बैठे- बैठे कमाई के सारे जरिए खत्म हो जाए और खर्चों का लगातार अपनी जगह बने रहना आम आदमी को डराने की स्थिति में ले आया है, पर लगता है अब कोई कुछ भी कर ले। उनको तो कोरोना के मरीजों की बढ़ने की अवस्था में ही जीने की आदत डालनी होगी। शायद यह बात अलग अलग राज्यों के मुख्यमंत्रियों को भी समझ में आने लगी है।

पिछले कुछ दिनों से कई राज्यों के मुख्यमंत्री कुछ इस तरीके से न्यूज चैनलों पर अपना बयान देने लगे हैं, जिससे लग रहा है कि लॉकडाउन तो कोरोना के रहते रहते ही खोलना पड़ेगा और लोगों को भी अब अपना और दूसरों का ध्यान खुद ही रखना होगा। लोगों को अब ना केवल अपना ध्यान रखना होगा। बल्कि दूसरों का भी ध्यान रखना होगा। लॉकडाउन खोलने के बाद सभी को मास्क लगाकर लगातार 2 गज की दूरी रखकर ही लोगों से मिलना जुलना होगा, जिससे वह अपने और अपने मित्रों की रक्षा कर सकें। कोरोना काल में अपने कार्य को करते रहते हुए यदि अपनी कमाई के साधनों को भी बनाए रखना है, तो 2 गज की दूरी का लगातार पालन करना होगा। कोरोना की इस बीमारी ने एक चीज तो लोगों को समझा दी है कि अब अपने बारे में ही लगातार सोचने से आप जिंदा नहीं रह सकते। यदि आपको जीवन में आगे बढ़ना है तो दूसरों का भी ख्याल उसी तरह करना होगा, जिस तरह आप अपना और अपने परिवार का रखते हैं। उसी तरह सभी का ख्याल रखना होगा। तभी यह प्रकृति और हमारा भारतवर्ष सुरक्षित रहेगा।

अंत में एक निवेदन के साथ ये लेख खत्म करता हूं कि दूसरों की सुरक्षा को अपनी सुरक्षा मानेंगे तभी आप जी पाएंगे वरना आज कोरोना और ना जाने कल भविष्य में क्या.क्या झेलना पड़ेगा।अब खुद जीयो और दुसरो को भी जीने दो शब्दो का पालन दिल से करना होगा।

नीरज त्यागी,
उत्तरप्रदेश

'राज प्रशस्ति' महाकाव्य

तैलंग पं. रणछोड़ भट्ट का अनुपम शिला शब्द शिल्प

जलदर्पण में निहारता संगमरमरी शब्द सौन्दर्य

यह कहा जाना अत्युक्ति न होगी कि राजप्रशस्ति महाकाव्यकार रणछोड़ भट्ट अंतर्मुखी प्रकृति के रचनाधर्मी थे। सोद्देश्य और प्रयोजन मूलक शब्द शिल्पी थे और अपने आश्रयदाता राणा राजसिंह द्वारा निर्देशित कार्य को पूर्ण करने एवं तत्दिशा में यथा आवश्यक किन्तु निष्ठावान् कवि कर्म की दिशा में प्रतिबद्ध थे। संभवत: इसीलिये स्वयं के बारे में अपने महाकाव्य में और अन्य रचनाओं में भी परिचय की लिप्सा से दूर रहे।

इसी प्रसंग में सागर स्थित विद्वान पद्मनाभ तैलंग द्वारा राज प्रशस्ति के अनुवाद के स्फुट छंद सुनने को मिले थे। यह राज प्रशस्ति को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रारंभिक प्रयास था। यह अधूरा ही रहा। इसी क्रम में जयपुर, वृंदावन के कुछ संस्कृत विद्वानों ने चंपू शैली गद्य और पद्य का मिलाजुला स्वरूप में इस कृति के अंशों की छिटपुट प्रस्तुति की थी।

राज प्रशस्ति के नौचौकी संगमरमरी पट्टिकाओं में सिमटकर रह जाने को उनके वंशजों ने भी कभी गंभीरता से नहीं लिया। सन् 1940 के आस पास तैलंग भट्ट व गोस्वामी वंश की वंशावली को तैयार करते समय इस वंशावली के मुख्य संपादनकर्ता गो. ब्रजभूषण लाल जी महाराज व पो. कंठमणि शास्त्री सहित गोकुलानंद तैलंग द्वारा किए गए लेखन के पत्रकों में राज प्रशस्ति के वे सर्ग जो रणछोड़ भट्ट के परिचय से सम्बद्ध थे, के भावानुवाद पढ़ने को मिले जो पुष्टिमार्ग से उनकी सबद्धता को बताने वाले होने व उनके कठौड़ी गोत्री होने को प्रमाणित करने वाले थे। यह भावानुवाद था, लेकिन आधुनिक लेखन शैली के प्रसंग में मेरे जैसे सामान्य पाठक के लिए इसे समझना कठिन था। तथापि इन वंशावली लेखकों ने अनुवाद को शब्दश: न परोसकर भावानुवाद की दृष्टि तो प्रदान की ही।

इस क्रम में अनुवाद के दो विशेष रूप मेवाड़ के स्वनामधन्य संस्कृत व इतिहास विज्ञ डा. चंद्रशेखर पुरोहित द्वारा लिखित 'मेवाड़ का संस्कृत साहित्य' व डा. श्रीकृष्ण जुगनू द्वारा अनुदित ग्रंथ 'शीलोत्कीर्ण राज प्रशस्ति महाकाव्यम' में देखे जाते हैं। डा. पुरोहित ने काव्य को सर्गवार विषय की गवेषणा करते हुए एवं ऐतिहासिक प्रमाणों को समक्ष रखकर गंभीर विश्लेषण के साथ भावानुवाद किया है। शोध की गहरी दृष्टि के साथ इसका फार्मेट विषय वस्तु को समझने में पर्याप्त सहायक रहा है। डा. पुरोहित के इस अवदान को विस्मृत नहीं किया जा सकेगा।

इसी क्रम में डा. श्रीकृष्ण जुगनू का अनुवाद शब्द व अर्थ की गहन संगति के साथ अक्षरश: अनुवाद के साथ सामने आया है। राणा राजसिंह कालीन मेवाड़ के इतिहास की यह अपने प्रकार की अनूठी टीका है। संस्कृत के उद्भट विद्वान होने के साथ भारतीय प्राचीन ग्रंथों की जानकारियां यहां साथ साथ प्रस्तुत हुई हैं। डा. जुगनू की देन मेवाड़ के शिलोत्कीर्ण इतिहास को समग्रता में हमारे समक्ष लाने के रूप में याद की जाएगी।

इन पंक्तियों के लेखक ने वर्तमान समय के जिज्ञासु और सामान्य ज्ञान की खोज में भटकते युवाओं, स्कूल व महाविद्यालयी विद्यार्थियों, समय समय पर राह चलते चलते हवाखोरी के लिए घूमने आने वाले बेफिक्र सैलानियों और जिन्हें इस विरासत के राजसमंद में होने का बोध नहीं है। ऐसे नगरवासियों को बस 'एक नज़र इधर भी' करने के आग्रह के साथ इस ग्रंथ का परिचय भर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसे प्रामाणिक बनाने हेतु उक्त ग्रंथों व अधिकृत विद्वानों को आधार बनाया है, जिनके प्रति हार्दिक कृतज्ञ हूं। सादर प्रस्तुत है।

अष्टम् सर्ग

'राजप्रशस्ति' की नवम् शिला में उत्कीर्ण इतिहास में राणा राजसिंह के अपने लघु भ्राता अरिसिंह के औरंगजेब से भेंट करने का उल्लेख किया गया है। वि.सं. 1714 की उस घटना का जिक्र है, जब औरंगजेब का अपने भाई सूजा के साथ विवाद हुआ था और कूटनीतिक संयंत्र पर संवाद करने राजसिंहजी ने सरदारसिंह नामक सामंत को औरंगजेब के पास भेजा था। वसाड़ (मंदसौर) और देवलिया को अपनी रियासत में सम्मिलित किया और किशनगढ़ के राठौड़ रूपसिंह की राजकुमारी चारुमती से राणा ने विवाह रचाया। इसी क्रम में दीवान के राजा अनूपसिंह के पुत्र मानसिंह से पुत्री अजय कुंवरी का विवाह सम्पन्न कराया। राणा ने वि.सं. 1725 माघ शुक्ल दशमी को लोकहित में बड़ीगांव में जनासागर का निर्माण कराया।

शतेसप्तदशेपंचविंशतेनामके।
वर्षे माघे राजसिंहो दशम्यांशुक्लपक्षके।।46।।
बड़ी ग्रामेतड़ागोत्सर्ग रूप्यतुलांव्यधात्।
नामा करोत्तड़ागस्य
जनासागर इत्ययम्।।47।।

नवम् सर्ग

वि. सं. 1698 में राजा जगतसिंहजी ने पुत्र राजसिंह को बारह वर्ष की उम्र में प्रधान युवराज बनाया। दशम शिला में उल्लेख है कि इस समय 'द्वादश आदित्य' के समान राजसिंह को विवाह हेतु जैसलमेर जाते हुए वर्तमान कांकरोली के समीप धोइंदा, सनवाड़, सेवाली, भगवंदा, मोरचणा, पसूंद, छापरखेड़ी, तासोल, मंडावर, वासोल, गुड़ली के चारों ओर एक जलाशय निर्माण का संकल्प लिया। यह संकल्प दृढ़ हुआ, जब मार्गशीर्ष वि.सं. 1718 को सैवंत्री में रूपनारायणजी के मंदिर में दर्शनार्थ आने पर राजा गरीबदास के साथ मंत्रणा कर गोमती नदी को बांध राजसमुद्र के निर्माण का संकल्प लिया। माघ कृष्ण सप्तमी वि. सं. 1718 को साठ हजार कार्मिकों के सहयोग से भूमि का उत्खनन कर निर्माण कार्य का शुभारंभ कराया। वैशाख शुक्ल 13 को जलाशय की पाल बांधने का मुहूर्त सम्पन्न हुआ। राजपुरोहित गरीबदास ने नींव में पंचरत्न रख अपनी सदाशयता का परिचय दिया।महाकवि ने राणा राजसिंह की तुलना कामदेव से कर बताया कि जैसे कामदेव ने शंबर नामक दैत्य का वध किया, वैसे ही राणा ने शंबर (जल) का वध किया। अर्थात् नियंत्रित किया। राणा का यह कार्य भगवान् राम के सेतुबंध की तरह ही था।

नूनं कामोसि राणेंद्र
यंत्र तत्रोदितच्छलात्।
शंबरंमुद्रितंतन्वन्
युक्तं सेतुं प्रबंधकृत।।42।।

'राजप्रशस्ति' महाकाव्य पर जिन विद्वानों ने विमर्श कर इसके मंतव्य को मूल अथवा टीकाओं के माध्यम से समय समय पर गहन ग्रंथों की रचना की है। प्रस्तुत संक्षिप्त परिचय माला में उन समस्त प्रात: स्मरणीय महानुभा के ग्रंथ, वक्तव्य, विचार और संदर्भों को संग्रहित और संग्रहित किया गया है। जिन पर पृथक् से आगामी अंक में सविस्तार निवेदन किया जाएगा। यहां उन समस्त के निर्लिप्त व निस्संग अवदान के प्रति हार्दिक आभार व साधुवाद्।

1. पो. कंठमणि शास्त्री वह गोकुलानंद तैलंग द्वारा गो. ब्रजभूषण लालजी के निर्देशन में तैयार 'तैलंग, भट्ट वह गोस्वामी वंशवृक्ष' राजप्रशस्ति पर सागरस्थ विद्वानों की टीकाओं के स्फुट अनुवाद)
2. मेवाड़ का राज्य प्रबंध साहित्य संस्थान संग्रहालय से संग्रहित सामग्री पर तरुण मित्रवर मंडल द्वारा आयोजित संगोष्ठियों में हुए अनुवाद
3. 'मेवाड़ के संस्कृत शिलालेख' डा. चंद्रशेखर पुरोहित द्वारा किया गया अनुवाद
4. 'शीलोत्कीर्ण राजप्रशस्ति महाकाव्य' डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू द्वारा किया गया अनुवाद। क्रमश: डा. राकेश तैलंग

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

देखो 2000 जमाना आ गया

इन दिनों दूरदर्शन पर रामायण, महाभारत, शक्तिमान तथा न्यूज चैनल के अलावा अन्य चैनलों पर सीरियल की रीपीट टेलीकास्ट जब से शुरू हुई, तब से सोशल मीडिया के उपभोक्ताओं में दो दशकीय इतिहास के पुनरावृत्ति का ट्रेंड सा चल पड़ा है। सुगमता, उपलब्धता एवं क्षमता के अनुसार प्रत्येक बंदा अपने चुड़ाकर्म, सगाई, विवाह, श्राद्ध, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था, स्कूल- कॉलेज आदि की बीस-तीस साल पुरानी तस्वीरें, यादें और संस्मरण को साझा करने लगा है। इक्कीसवीं सदी के 20वें साल में बीस साल पूर्व की तस्वीरें संस्मरण आदि को फेसबुक, ट्वीटर आदि के माध्यम से जन सामान्य तक पहुंचाने की एक मुहिम सी छिड़ गई है। मानो कोरोना काल में अतीत को सैनेटाइज किया जा रहा है।

'बहुत कुछ बदल गया इन बीस सालों में' तथा 'ओल्ड इज गोल्ड' की कसक लिए हर कोई याशिका कैमरे से ली गई नॉन डिजिटल पुरानी तस्वीरों को फेसबुक पर चेंप रहा है। तस्वीरें भले पुरानी हो, किन्तु फेसबुक पर मिलने वाली लाइक और कमेन्ट्स शत प्रतिशत फ्रेश होते हैं। अतीत की यादों में रिवाइंड होकर हर कोई मान और मनवा रहा है कि वर्तमान समय और दो दशक पूर्व के मानव समाज और जीवनशैली में काफी बदलाव आ गया है।

किन्तु सोशल मीडिया की बजाय सोशल एक्टीविटी में सक्रिय रहने वाले पोस्ट कार्ड युगीन दीना चच्चा का मानना है कि दो दशक क्या दो शताब्दी के बाद भी कुछ नहीं बदला है, सबकुछ वही है, बदला है, तो बस कैलेंडर और तारीख।

बकौल दीना चच्चा 'क्या खाक बदलाव आया है दो दशक में' अब चुनाव का ही देख लो बीस साल पहले की तो छोड़ो पचास साल पहले भी गरीबी, बेरोजगारी, मंहगाई हटाने के मुद्दे पर चुनाव लड़ा जाता था। आज भी उन्हीं मुद्दों पर चुनाव लड़ा जाता है। बीस साल पहले हॉलीवुड की पटकथा का नकल करके बॉलीवुड में फिल्में बनती थी, तो वर्तमान में साउथ मूवी की पटकथा पर रीमेक हो रहा है अर्थात नकल पद्धति अभी भी जारी है। बीस साल पहले भी चीन और पाकिस्तान का चल चरित्र विश्वसनीय नहीं था और आज भी विश्वसनीय नहीं है। बीस साल पहले भी राम और रहीम के नाम पर इंसान लड़ते थे, आज भी हिन्दु और मुसलमान के नाम पर लड़ ही रहे हैं। अब हमारी प्रेम कहानी को ही देख लो, मैं कलबतिया को तीस साल पहले भी प्यार करता था और आज भी करता हूं। इसी तरह कलबतिया तीस साल पूर्व अपने मां- बाप के डर से हमसे मिल नहीं पाती थी, तो आज अपने मरद के डर से नहीं मिल पाती है। अर्थात प्रेम

में विद्यमान भय का स्वरूप बदला है, लेकिन मौलिकता नहीं। अब साहित्य को ही ले लो, बीस- तीस साल पहले लेखक की रचनाएं आग उगलती थी, तो आजकल की रचनाएं जहर उगलती है। अर्थात रचनाओं में दहकता अभी भी विद्यमान है। दो दशक पूर्व की फिल्मों में जो गाना था, वो रीमिक्स ही सही किन्तु आज की फिल्मों में भी सुनने और देखने को मिल रही हैं। दो दशक पूर्व भी खैनी हथेली पर रगड़ने के बाद खाते थे, तो आज भी उसी प्रकार से सेवन कर रहे हैं। दो दशक पूर्व भी वायरस (सार्स) से दुनिया त्रस्त थी, तो आज भी एक वायरस (कोरोना) से त्राहिमाम है। दो दशक पूर्व भी बाप नालायक बेटा से और देश निकम्मा नेता से तबाह था, वो तबाही आज भी जारी है।

दीना चच्चा की माने तो भैया दो दशक बाद भी सबकुछ जस का तस है, कुछ भी बदलाव नहीं आया है, तो फिर ये 2020 में 20 वर्ष पहले वाली ट्रेंडिंग क्यों? अर्थात 2020 वाले बादशाह डीजे के बैंड पर 2000 वाले बिस्मिल्ला खां की शहनाई की धुन क्या बजाना।

बहरहाल दीना चच्चा का ये व्यक्तिगत मत हो सकता है, लेकिन सोशल मीडिया पर 2000 रिटर्न वाला ट्रेंड देखकर आमिर खान की फिल्म मेला का वो कालजयी गाना बरबस याद आ गया 'देखो टु थाउजेंड जमाना आ गया'।

विनोद कुमार 'विक्की'
व्यंग्यकार, बिहार
मो. 77659-54969

योग रखता है निरोग

षष्ठ योगदिवस की शुभकामनाओं तथा ''वर्धतां भारते योगः'' इस निश्चय के साथ योगशब्द के विविध निर्वचन आप सभी के समक्ष हैं-

1. महर्षि पतंजलि के अनुसार-

''योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'' (पतंजलिण्योण्सू 1/2)

अर्थात्- चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।

2. गीता के अनुसार- ''योगः कर्मसु कौशलम्'' (गीता 2/50)

अर्थात् - कर्म करने की कुशलता ही योग है।

''समत्वं योग उच्यते'' (गीता 2/48)

अर्थात्- सुख-दुःख, हानि-लाभ, सफलता असफलता आदि द्वन्द्वों में सम रहते हुए निष्काम भाव से कर्म करना ही योग है।

''दुःख संयोग वियोग योग संज्ञितम्'' (गीता 6/23)

अर्थात् जो दुःख रूप संसार के संयोग से रहित है उसका नाम योग है।

3. महोपनिषद् के अनुसार-

''मनः प्रशमनोपायो योग इत्यभिधीयते'' (महो0 5/42)

अर्थात्- मन के प्रशमन के उपाय को योग कहते हैं।

4. महर्षि याज्ञवल्क्य के अनुसार-

''संयोग योगयुक्तो इति युक्तो जीवात्मा परमात्मनो।''

अर्थात्- जीवात्मा और परमात्मा के मिलन को ही योग कहते हैं।

5. कैवल्योपनिषद् के अनुसार-'श्रद्धा भक्ति ध्यान योगादवेहि'

अर्थात्- श्रद्धा, भक्ति, ध्यान के द्वारा आत्मा का ज्ञान ही योग है।

6. विष्णुपुराण के अनुसार-

''योगः संयोग इत्युक्तः जीवात्मा''

योगाभ्यास के संदर्भ में कहा जाता हैं कि यह सभी उम्र के लोगों के लिए स्वास्थ्य प्रदायक एवं निरोगकारी होता हैं।

''युवा वृद्धो अतिवृद्धो व्याधितो दुर्बलोति वा।
अभ्यासाद् सिद्धिमाप्नोति सर्व योगेश्वतन्दितरू।''

आपका शरीर वृद्ध हो, युवा हो, रोगी हो या दुर्बल हो, किसी भी हालत में आप योगासन कर सकते हैं।

21 जून विश्व योग दिवस

विचारों का अनुलोम विलोम कीजिए। बुरे विचार बाहर, भले विचार भीतर, मन को पद्मासन में स्थिर कीजिए ।तन को वज्रासन में रखिए, दिमाग को सूर्यासन का तेज दीजिए, होठों पर मुस्कुराहट रखिए और याद रखिए...।

जीवन एक योग है। अतः किसी भी प्रकार के गुणा भाग से स्वयं को बचाते हुए- 'योग करिए निरोग रहिए'

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

गीतायाम् अपि कथ्यते-

योगः कर्मसु कौशलम्

अधुना अखिलम् विश्वम् अपि जून मासस्य एक एकविशतिः तिथिः योगदिवसः इति मन्यते।

समस्तदेशाः सम्प्रति योगस्य महत्वम् स्वीकुर्वन्ति।

जयतु योगः जयतु भारतः एवम् जयतु विश्वम्

योगः भारतस्य आधारः अस्ति।

योगं विना वयं स्वस्थः सानन्दः च भवितुम नशक्नुमः।

सर्वप्रथम महर्षि पतंजलिः योगसुक्तम् प्रतिपादितम्।

अस्मिन् ग्रन्थे अष्टांग योगस्य वर्णनम् अस्ति।

सम्प्रति महानगरे प्रदूषणस्य समस्या अस्ति।

ध्वनि, वायुः एवम् जलप्रदूषणः महानगरस्य जीवनस्य विकट समस्या अस्ति।

एकल परिवारः महानगरस्य यथार्थः

एतेन कारणेन जनाः रुग्नाः भविन्त।

समयाभावेन जनेषु परस्परम् प्रेमः स्नेहः च न अस्ति।

वयम् सर्वे तनावग्रस्ताः भवामः।

अतएववयम् नूनं योगः करणीयः ।

प्रतिदिनम् प्रातः सायं योगम् पूजनीयम्।

केवलम् योगेन वयम् स्वस्थः भविष्यामः

शारीरिकम् मान्सिकम् च पुष्ठये योगः महत्त्वपूर्णः अस्ति।

गगेन्द्रसिंह आर्य
प्रांतीय महामंत्री आर्य वीर दल राजस्थान
प्रधानाचार्य, गायत्री विद्या मंदिर उमावि
राजसमंद, मो. 74250-70732

भटकतीं ट्रेनें

सन् 2020 काफी यादगार साल है, जो दिलों में सालों साल फांस सा चुभने वाला है। दसियों साल बाद 2020 ई. का कैलेण्डर बच्चों को डराने के काम आएंगे, मांए दिखाकर कहेगी- चुप हो जा, नहीं तो यह साल फिर से आ जाएगा। बेचारे बच्चे कल्पना का पल्लू पकड़कर मजबूरन उग्राग्रह त्यागकर मांओं के आदेशों का अक्षरश: पालन करेंगे। मांओं का आदेश सुप्रीम कोर्ट की तरह लेटलतीफ नहीं होता है कि पहले कह दें कि यह हमारा अधिकार क्षेत्र नहीं है। इस पर निर्णय फैलाने करेंगे और जो शिकायतकर्ता हो उसी पर जुर्माना ठोक दें और झिड़ककर बोलें श्यल हट डाढ़ीजार! यह सब पब्लिसिटी के लिए कर रहा है। मोबाइल की स्क्रीन नज़रें उठाकर आस पास देखिए जो मांएं तुरत आदेशित करती हैं, उनके बच्चे अनुशासित होंगे। अपनी नाकामियां छुपाने के लिए झूठे आंकड़ों की कुतुबमीनार तामीर नहीं करेंगे। मांओं को ज्ञात है कि बाद में स्वत: संज्ञान (सो मोटो कॉल) लेने से अच्छा है पहले ही टाइट हो जाओ, नहीं तो बच्चों की लापरवाही किसी निर्दोष, मजबूर मजदूर के लिए जानलेवा हो जाए।

मजदूर से याद आया कि इस समय मजदूर रेल का सफर कर रहे हैं। आप लोग कहेंगे कि इसमें नई बात क्या है भला, मजदूर आदिमकाल से सफर में रहा है। चाहे वह अंग्रेजी वाला सफर हो या उर्दू वाला सफर हो। लेकिन भाई आजकल उर्दूवाला सफर अंग्रेजी वाला सफर इस तरह गठबंधन कर लिए हैं कि मजदूर जनता सीधे स्वर्गगामी हो जाती है। खादी के बहरे कानों में शायद यह बात अभी तक किसी ने डाली नहीं, वरना सुनने को जरूर मिलता। किसी चैनल के जरिए कि हमारी कुशल नीतियों के कारण ही हवाई चप्पलों से रहित चरण स्वर्ग तक पहुंच गए, नहीं तो सड़कों पर घिसट रहे थे।

हां, तो बात रेल की हो रही है। वह रेल जो श्रमिक स्पेशल कहलाती है। जब तक काम करने वाले सड़क या प्लेटफॉर्म के बाहर हैं, तब तक वे प्रवासी मजदूर होते हैं और ज्योंही प्लेटफॉर्म में कदम रखते हैं, वे स्पेशल श्रमिक बन जाते हैं। एक बात ग़ौर करने लायक है, क्योंकि शायद आगे यह जीके का विषय बन जाएगा कि मजदूरों के लिए किसी मिशन की जरूरत नहीं महसूस हुई, जबकि प्रवासी भारतीयों को मिशन के तहत लाया गया। दोनों में जमीन- आकाश का अंतर है, पर एक शब्द समान है प्रवासी। जो देश के बाहर है, वह भी प्रवासी और जो सड़कों पर है, वह भी प्रवासी है।

श्रमिक स्पेशल ट्रेनों से मजदूरों को स्पेशल सफर का अनुभव कराया जा रहा है। पहले मजदूर कराहते रहे कि हमें ट्रेनें चाहिए। अफसरों ने सोचा चलो, तुम्हें अच्छी तरह से यात्रा कराया जाए और ऐसी रेल चलाई कि मजदूर हाथ- पांव जोड़ने लगे कि माई बाप उतार दो... उतार दो...। जमीन पर थे तो कम से कम पानी तो नसीब होता था। इन ट्रेन की बोगियों में पहले तो कुछ आता नहीं है तथा जो आता भी है बंदरबांट शुरू हो जाती है और भीगी बिल्लियां मुंह तांकती रह जाती हैं।

जिस रेलगाड़ी को दो दिनों में गंतव्य तक पहुंचना था, वह पांच- पांच दिन में पहुंच रही है। अरे भाइयों- बहनों! यह लॉकडाउन केवल मनुष्यों के लिए थोड़े है, ट्रेनें भी तो अपने अपने यार्डों में कैद थीं, ऐसे में रेलगाड़ियां अगर थोड़ा सा सैर सपाटा कर लेती हैं, तो आपके पेट में मरोड़ क्यों उठ रहा है? आपको दूरगामी परिणाम नहीं समझ में आएंगे। कल जब एससी वाले चलेंगे तो उन गाड़ियों को कौन चलाएगा, तब यही ड्राइवर तो काम आएंगे तो अभी से इन्हें रास्तों से परिचित कराया जा रहा है, क्योंकि भूल गए होंगे न लॉकडाउन में। रेलगाड़ियां बेलाइन हो रही हैं, तो क्या हुआ कम से कम सीटी तो बजा रही हैं और लाइन तो लाइन में है न। जो जान गंवा रहे हैं उनके प्रति कौन जिम्मेदारी ले भला, मजदूर हैं और गरीब भी, हमारे देश में गरीबों को तभी महत्त्व दिए जाने की परंपरा है जब उनकी उंगली में स्याही लगानी होती है या रैलियों में नारें लगाने होते हैं।

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट (उत्तरप्रदेश) 86041-12963

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

एक मुलाकात कोरोना से

आजकल दुनिया भर के हर इन्सान के जेहन में कोरोना बसा हुआ है। यह हमारी सार्वभौमिक एकता का परिचायक भी है। पहले कभी किसी के मन में सिर्फ धन कमाने के खयाल आते थे तो किसी प्रेमी को अपने प्रियतम के, इसी तरह किसी भूखे को रोटी के खयाल आते थे तो किसी बेरोजगार को नौकरी के। कहते हैं भगवान कृष्ण मनोहर है, जो अपने भक्तों के मन के समस्त वृत्तियों को भी हर लेते हैं। ठीक उसी तरह इस कोरोना ने भी सभी के मन को अपने वश में कर लिया है, जिसके कारण आजकल सभी को सोते जागते उसी का विचार आता है।

दिनभर के कोरोना स्मरण के कारण मुझे भी एक दिन सपने में कोरोना के दर्शन हुए। कोरोना को देखते ही मैं सहज ही हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ने लगा, तभी ध्यान आया कि कोरोना को तो दूर से ही राम राम करनी चाहिए, मोदीजी से लगाकर गली के रायचंद ने भी यही सलाह दी थी। मैंने कोरोना की ओर अभिवादन में बढ़ाए हाथों को कछुए की तरह समटते हुए दूर से राम राम की। कोरोना के चेहरे पर भी मेरे असहज व्यवहार को देखकर हल्की मुस्कान आ गई और कहने लगा, अरे इसकी कोई जरूरत नहीं है, मुझसे तो कोई भी राम राम करना नहीं चाहता है। मुझे तो इस दुनिया के बेगानेपन की अब आदत सी हो गई है। उसकी आवाज में हर तरफ से तिरस्कृत गरीब मजबूर सा दर्द झलक रहा था।

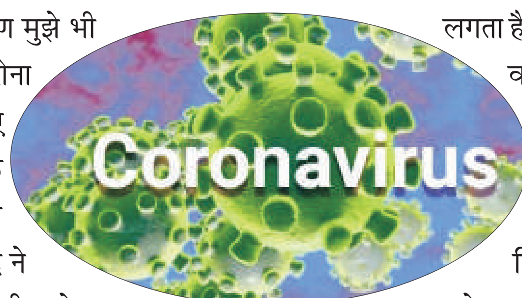

मैंने कहा कोरोना महाशय... तुम्हें इतना भोला बनने की जरूरत नहीं है। तुमने कर्म ही ऐसे किए तो कौन तुम्हारा सम्मान करेगा ? तुम्हारे आतंक से सम्पूर्ण विश्व भयभीत हैं, लाखों का भोग तुम ले चुके हो और इतना करके भी अब हमसे सम्मान की अपेक्षा करते हो, तुम्हे शर्म आनी चाहिए। जब मेरे मन की दबी भड़ास निकली तो मुझे भी बड़ी राहत महसूस हुई।

मेरे कठोर शब्दों पर अपने चेहरे की वो उदासी त्यागकर राक्षसी अट्टहास करके बोला– तुम सब इन्सान एक जैसे हो, कभी भी स्वयं के गिरेबान में नहीं झांकते हो, हमेशा दूसरों को दोष देने में ही तुम्हें आनंद मिलता है। मैं सारे जहां घूमकर आया हूं, सभी जगह मुझे ही बदनाम किया जा रहा है।

हमारे बेदाग छूटते घोटालेबाज नेताओं की तरह वह भी अपने दुष्कर्मों पर साफ मुकर गया। मैंने कहा, तो क्या तुम भी हमारे देश के कर्णधारों की तरह दूध के धुले हुए हो और ये मौत के आंकड़े भी क्या काले धन की तरह फर्जी है।

उसने कहा, तुम लोग आंकड़ों की हेराफेरी में बड़े माहिर हो, जब सत्ता में रहते हो तो गरीबी व बेरोजगारी के आंकड़े कम हो जाते हैं, तब सड़क पर मांगकर खाने वाला भी आपको बेरोजगार नहीं लगता है। मगर जब विपक्ष में बैठते हो तो पकोड़े बैचने वाला भी बेरोजगार की श्रेणी में आता है। तुम मेरी असलियत सुनना चाहते हो, तो सुनो। कोरोना अब गंभीर होकर बोलने लगा– यह सही बात है कि मैंने कुछ लोगों को बीमार किया और उनमें से कुछ लोग मृत्यु को भी प्राप्त हो गए। मगर मैंने उन्हें नहीं मारा है। तुम्हारे देश में अब तक प्रतिदिन ब्लड प्रेशर, शुगर, हार्ट अटैक, एड्स व कैंसर सहित कई बीमारियों से मरते थे। आजकल इन सब मरने वालों का सारा दोष मेरे ऊपर मंडा जा रहा है। मगर मैं किसी को भी मारने नहीं आया हूं, सिर्फआगाह करने आया हूं तनिक सोचो कि तुम इन्सानों ने इस प्रकृति पर कितने अत्याचार किए हैं। प्रकृति का अंधाधुंध दोहन व बेशुमार प्रदूषण कर प्राकृतिक संतुलन तक बिगाड़ दिया है, बेजुबान जीवों की हत्या करके भी तुम खुद को इन्सान कहते हो। भौतिक सुख की चाह में प्रकृति के साथ अपने रिश्तों को भी महत्व देना बंद कर दिया था। मैंने तो सिर्फ एक मौका दिया है आत्म मंथन का, एक मौका दिया अपने माता– पिता व परिवार के रिश्तों के संग जीने का, धन की मृगमरिचिका में मशगुल मनुष्य को रोककर एक मौका दिया हैं, जीवन के उद्देश्य की ओर उन्मुख होने का। यदि अब भी सम्भल सको तो संभल जाओ। भगवान कृष्ण के गीतोपदेश की तरह कोरोना के सद्वचनों को सुनकर मैं भी अर्जुन की तरह नतमस्तक हो गया।

कोरोना नया रूप लेकर 102 साल पुराना दर्द

आज पूरी दुनिया कोरोना वायरस से लड़ रही है। ये वायरस लगभग सभी देशों में फैल चुका है। पूरी दुनिया में कोरोना से संक्रमित मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है। कोरोना वायरस की इस महामारी ने लोगों को 1918 के स्पेनिश फ्लू की याद दिला दी है। उस दौर में जिस तेजी से ये संक्रमण फैला था और जितनी मौतें हुई थी, उससे पूरी दुनिया को हिला दिया था। 102 साल पहले पूरी दुनिया में स्पेनिश फ्लू के कहर से एक तिहाई आबादी इसकी चपेट में आ गयी थी। कम से कम पांच से दस करोड़ लोगों की मौत इसकी वजह से हुई थी। रिपोर्टस के मुताबिक इस फ्लू के कारण भारत में न्यूनतम 1 करोड़ 55 लाख लोगों की मौत हुई थी।

स्पेनिश फ्लू की वजह से करीब पौने दो करोड़ भारतीयों की मौत हुई है, जो विश्व युद्ध में मारे गए लोगों की तुलना में ज्यादा है। उस वक्त भारत ने अपनी आबादी का छह फीसदी हिस्सा इस बीमारी में खो दिया था। मरने वालों में ज्यादातर महिलाएं थीं। ऐसा इसलिए हुआ था, क्योंकि महिलाएं बड़े पैमाने पर कुपोषण का शिकार थी। वो अपेक्षाकृत अधिक अस्वास्थ्यकर माहौल में रहने को मजबूर थी। इसके अलावा नर्सिंग के काम में भी वो सक्रिय थी।

ऐसा माना जाता है कि इस महामारी से दुनिया की एक तिहाई आबादी प्रभावित हुई थी और करीब पांच से दस करोड़ लोगों की मौत हो गई थी। गांधीजी और उनके सहयोगी किस्मत के धनी थे कि वो सब बच गए। हिंदी के मशूहर लेखक और कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की बीवी और घर के कई दूसरे सदस्य इस बीमारी की भेंट चढ़ गए थे। उन्होंने बाद में इस सब घटनाचक्र पर लिखा भी था कि मेरा परिवार पलक झपकते ही मेरी आंखों से ओझल हो गया था। वो उस समय के हालात के बारे में वर्णन करते हुए कहते हैं कि गंगा नदी शवों से पट गई थी। चारों तरफ इतने सारे शव थे कि उन्हें जलाने के लिए लकड़ी कम पड़ रही थी। ये हालात तब और खराब हो गए थे, जब खराब मानसून की वजह से सुखा पड़ गया और अकाल जैसी स्थिति बन गई। इसकी वजह से बहुत से लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो गई थी। शहरों में भीड़ बढ़ने लगी। इससे बीमार पड़ने वालों की संख्या और बढ़ गई।

मुंबई शहर इस बीमारी से बुरी तरह प्रभावित हुआ था। उस वक्त मौजूद चिकित्सकीय व्यवस्थाएं आज की तुलना में और भी कम थीं। हालांकि इलाज तो आज भी कोरोना का नहीं है, लेकिन वैज्ञानिक कम से कम कोरोना वायरस की जीन मैपिंग करने में कामयाब जरूर हो पाए हैं। इस आधार पर वैज्ञानिकों ने टीका बनाने का वादा भी किया है। 1918 में जब फ्लू फैला था, तब एंटीबायोटिक का चलन इतने बड़े पैमाने पर नहीं शुरू हुआ था।

इतने सारे मेडिकल उपकरण भी मौजूद नहीं थे, जो गंभीर रूप से बीमार लोगों का इलाज कर सके। पश्चिमी दवाओं का इस्तेमाल भी भारत की एक बड़ी आबादी नहीं किया करती थी और ज्यादातर लोग देसी इलाज पर ही यकीन करते थे।

इन दोनों ही महामारियों के फैलने के बीच भले ही एक सदी का फासला हो लेकिन इन दोनों के बीच कई समानताएं दिखती हैं। संभव है कि हम बहुत सारी जरूरी चीजें उस फ्लू के अनुभव से सीख सकते हैं। उस समय भी आज की तरह ही बार बार हाथ धोने के लिए लोगों को समझाया गया था और एक दूसरे से उचित दूरी बनाकर ही रहने के लिए कहा गया था। सोशल डिस्टेंसिंग को उस समय भी बहुत अहम माना गया था और आज ही की तरह लगभग लॉकडाउन की स्थिति उस समय भी थी इतने सालों बाद भी वही स्थिति वापस हो गई है।

स्पेनिश फ्लू की चपेट में आए मरीजों को बुखार, हड्डियों में दर्द, आंखों में दर्द जैसी शिकायत थीं। इसकी वजह से महज कुछ दिन में मुंबई में कई लोगों की जान चली गई। एक अनुमान के मुताबिक जुलाई 1918 तक 1600 लोगों की मौत स्पैनिश फ्लू से हो चुकी थी। केवल मुंबई इससे प्रभावित नहीं हुआ था। रेलवे लाइन शुरू होने की वजह से देश के दूसरे हिस्सों में भी ये बीमारी तेजी से फैल गई। ग्रामीण इलाकों से ज्यादा शहरों में इसका प्रभाव दिखाई दिया। मुंबई में तेजी से फैलने के बाद इस वायरस ने उत्तर और पूर्व में सबसे ज्यादा तांडव मचाया। ऐसा माना जाता है कि दुनियाभर में इस बीमारी से मरने वालों में पांचवां हिस्सा भारत का था। बाद में असम में इस गंभीर फ्लू को लेकर एक इंजेक्शन तैयार किया गया, जिससे कथित तौर पर हजारों मरीजों का टीकाकरण किया गया। जिसकी वजह से इस बीमारी को रोकने में कुछ कामयाबी मिली।

हालांकि बाद में कुछ बाते सामने आई। सन 2012 की एक रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत के जिन हिस्सो में अंग्रेजो की ज्यादा बसावट थी। उन हिस्सों में इस बीमारी ने ज्यादा कहर मचाया था। इन हिस्सो में भारतीय इस महामारी में सबसे अधिक मारे गए थे। अब एक बार फिर से कोरोना के बढ़ते कहर की वजह से लोग बेहद आशंकित हैं। फिलहाल सरकार और दूसरी संस्थाएं लगातार लोगों को इस गंभीर वायरस से बचाव को लेकर कोशिश में जुटी हुई हैं। आखिरकार गैर सरकारी संगठनों और स्वयंसेवी समूहों ने आगे बढ़कर मोर्चा संभाला था। उन्होंने छोटे छोटे समूहों में कैंप बना कर लोगों की सहायता करनी शुरू की। पैसे इकट्ठा किए, कपड़े और दवाइयां बांटी है। नागरिक समूहों ने मिलकर कमेटियां बनाईं। एक सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक, भारत के इतिहास में पहली बार शायद ऐसा हुआ था, जब पढ़े- लिखे लोग और समृद्ध तबके के लोग गरीबों की मदद करने के लिए इतनी बड़ी संख्या में सामने आए थे।

आज की तारीख में जब फिर एक बार ऐसी ही एक मुसीबत सामने मुंह खोले खड़ी है, तब सरकार चुस्ती के साथ इसकी रोकथाम में लगी हुई है, लेकिन एक सदी पहले जब ऐसी ही मुसीबत सामने आई थी, तब भी नागरिक समाज ने बड़ी भूमिका निभाई थी। जैसे- जैसे कोरोना वायरस के मामले बढ़ते जा रहे हैं। इस पहलू को भी हमें ध्यान में रखना होगा और सभी लोगो को मिलकर इस बीमारी की लड़ाई में आगे बढ़ना होगा।

नीरज त्यागी
लाल क्वार्टर, राणा प्रताप स्कूल के सामने गाज़ियाबाद (उत्तरप्रदेश)

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधि जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
नाथद्वारा - नवीन सनाढ्य, मो. 96729-83215
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

मत्स्यगंधा

पलाश आंखें मूंदे पड़ा था। पलकें भीगी हुई थीं और वो कहीं खोया हुआ सा। इरा, उसकी बड़ी बड़ी आंखें, उसके व्यक्तित्व का ठहराव... पर मां, मां को कैसे मनाऊं।

यूपी की ब्राह्मण महिला जिसने कभी मांस- मछली को हाथ ही नहीं लगाया। उसकी बहू बनाकर ले आया, एक बंगाली लड़की को अपराधी की तरह महसूस हो रहा था उसे।

पर क्या प्यार करना इतना बड़ा जुर्म है?

मैं, मैं नहीं रह सकता इरा के बिना।

तो, तो मां के बगैर रह सकते हो? जैसे अंतरात्मा ने धिक्कारा था उसे। आखिर पिताजी के देहांत के बाद उसका मां के सिवा था ही कौन?

मां ने कितनी मुश्किलों से पाला था उसे। नौकरी और घर दोनों को ही तो संभालती आई थीं।

उधर अपने कमरे में लेटी सुलभा जी के मन में जाने कैसी उधेड़बुन थी। बारिश की बूंदों ने मन का अवसाद बढ़ा दिया था।

तू इस मांस- मछली खाने वाली को मेरे घर की बहू बनाकर ले आया है? मैं इसे कभी अपनी बहू नहीं मान सकती। उन्होंने तुगलकी फरमान जारी कर दिया था। उनका दिल जीतने को कितना कुछ तो किया था इरा ने, मांस- मछली खाना छोड़ दिया। बांग्ला में बड़बड़ाना भी, नृत्य जो कि उसका पहला प्यार था, उसे भी पर सुलभा जी के अंदर की सास को न रिझा पाई। हारकर इरा अपने मायके जाकर रहने लगी थी।

तभी छपाक की आवाज आई। सामने एक्वेरियम में रखी रंगीन मछलियां जैसे बाहर आने को तड़प रही थीं। उन्हें बेटे- बहू के उदास चेहरे, उनकी कोशिशें, मिन्नतें सब याद आने लगे।

उफ्फ...। क्या कुछ नहीं किया उस मासूम ने? सुलभा जी ने बेचैनी से खिड़की के परदे सरका दिए। पीछे का छोटा सा तालाब बारिश के पानी से लबालब भरा था। जाने क्यों उनके अंदर की ममता तड़प उठी।

हौले से पलाश के कमरे में कदम रखा। पलाश की पलकें अब भी भीगी थीं। मासूम चेहरे को उदासी ने ढंक रखा था। क्षणभर को उन्हें लगा जैसे वो अपने पिता का ही प्रतिरूप हो। उन्होंने धीरे से पलाश के माथे को छुआ। पलाश उठ बैठा था।

मां, जैसे कहीं दूर से आवाज आई।

इरा को घर कब लाएगा बेटा? उन्होंने जैसे अपनी कश्मकश से निकलते हुए पूछा। पलाश ने हैरानी से उन्हें देखा।

हां बेटा, ले आ मेरी बहू को, मेरा मन नहीं लगता।

पलाश की आंखों से मोती गिर पड़े। सुलभाजी हौले से उसकी नज़र बचा एक्वेरियम को तालाब में खाली कर आईं। अब वो मछलियां बड़ी शान से उसमें तैर रही थीं।

अर्चना आनंद भारती
आसनसोल (पश्चिम बंगाल)

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

गणगौर के दो दीवाने (हीरो)

मेरे शहर कांकरोली के सबसे आकर्षक पर्व जन्माष्टमी के बाद अगर कोई हैं, तो वह है, गणगोर पर्व, जो पिछले लगभग कई वर्षों से बड़े धूमधाम के साथ हर्षोल्लास से मनाया जाने वाला पर्व है। 40 वर्ष पूर्व यह पर्व कांकरोली के महाराज श्री की ओर से गरिमापूर्ण तरीके से मनाया जाता था। गणगौर की सवारी द्वारकाधीश मंदिर से प्रारंभ हो मुख्य मार्गों से होती हुई विट्ठलविलास बाग में जाया करती थी और वहीं सारे अनुष्ठान पूरे होते थे। भव्य लवाजमे के साथ महाराजश्री और उनके परिवार के लोग सजधज कर लोगों से रूबरू हुआ करते थे। पर उसके बाद कुछ सालों बंद होने के बाद शहर के नागरिकों ने नगर विकास परिषद के माध्यम से इस पर्व को फिर धीरे धीरे प्रारंभ कर दिया, उस समय स्टेडियम नहीं था। अतः श्री बालकृष्ण विद्याभवन के पीछे के मैदान पर ही इसका आयोजन होने लगा और लगभग पिछले 30-35 वर्षों से इस पर्व को नगरपालिका के तत्वावधान में आयोजित किया जाने लगा जो धीरे धीरे भव्य रूप धारण कर कांकरोली में आकर्षण का केन्द्र बन गया। गणगौर पर्व के आते ही लोगों की उत्सुकता बढ़ने लग जाती है, सवारी की भव्यता देखने लोगों का हुजूम आस पास के गावों से भी बड़ी संख्या में शहर की सड़कों पर उमड़ पड़ता है और जब सवारी हाथी, ऊंट, घोड़े, रथ और पालकियों के साथ साथ चमकीली पौशाकों में सजी सर पर कलश लिए महिलाएं और स्कूली बच्चों के करतबों के साथ गुजरती तो लोगों के जयकारों से पूरा शहर कंपायमान हो उठता। द्वारकाधीश की पालकी के साथ द्वारकाधीश की जय, पूंछड़ी के लोटे की हूंक, बोल मेरे प्यारे, गिरिराज धरण की जय का उद्‌बोधन करती तो वातावरण धार्मिक बन जाता है। सबसे आगे ऊंट पर दोनों और नंगाढ़े बजाते स्व. श्री देवीलालजी पोरवाड़ और पुरी गणगौर की सवारी को थानेदार की ड्रेस पहन मुंह में पहिया (सीटी) लिए श्री गोटूलालजी पालीवाल बड़ी तत्परता से पुरी गणगौर की सवारी को नियंत्रित करते थे। आज गणगौर पर्व उन दोनों की याद आई और आज इन दोनों के बारे में मेरा गांव, मेरे लोग के तहत बताने जा रहा हूं।

स्व. श्री देवीलाल पोरवाड़

श्री देवीलालजी का पुश्तैनी मकान सूरजपोल के अन्दर घुसते ही पहला मकान है, जब मैं वहां पहुंचा तो उनके बड़े लड़के श्री नानालाल पहलवान से मेरा सामना हुआ, श्री नानालाल ने श्री देवीलालजी के बारे में बताया कि वे कब पैदा हुए जन्म दिनांक तो हमें मालुम नहीं पर 16.05.2016 को उनका देहावसान हो गया। 87 वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधारे तो आप उनके जन्म का सन् तो निकाल ही लेंगे। मैं उनके चतुराई भरे जवाब से आश्चर्यचकित मुस्कान के साथ नानालाल को कुछ क्षण देखता ही रह गया। पिता श्री किशनलाल जी पोरवाड़ और माता श्री धापू बाई की कोख से जन्मे श्री देवीलालजी ने सिर्फ प्राइमरी स्कूल तक ही अपनी शिक्षा पाई और पिताजी के साथ अपने खानदानी कार्य में लग गए। श्री द्वारकाधीश मन्दिर में कार्य करने लगे। जब कुछ बड़े हुए तो मन्दिर के नंगार खाने में नगाड़े बजाने और शहनाई वादन का कार्य करने लगे। साथ साथ सुन्दर टॉकीज सिनेमा में भी प्रचार प्रसार का काम करने लगे। मेरी पहली पहचान श्री देवीलालजी से उन्हीं दिनों हुई लगभग 60- 65 वर्ष पूर्व रंग-बिरंगी फरियां सजे पाजामे और कुर्ते को पहन सिर पर लंबी गज भर की फूंदे वाली टोपी लगाए हाथ में लोहे के पत्रे से बना भोपूं अपने मुंह पर लगा ऊंची आवाज में सुनिए सुनिए साहेबान आपके प्रिय सुन्दर टॉकीज के रूपहली पर्दे पर मारधाड़ से भरपूर और मनभावन गानों से सजी फिल्म चन्द्रलेखा जिसमें रंजन की तलवारबाजी और जयमाला का नंगाड़ों पर नृत्य जरूर देखिये, रोज रात को 8 बजे एक शो देखना न भूलें।

उन दिनों हर दो या तीन दिन में फिल्म बदल जाया करती थी, किसी धार्मिक, सामाजिक या हंसीमजाक से भरपूर फिल्म का प्रचार प्रसार करने श्री देवीलाल जी पूरे गांव के गली मोहल्ले में ऊंची आवाज में प्रचार प्रसार करते और इसी तरह उनका चेहरा मोहरा और बोलने का अंदाज मेरे जेहन में घर करता चला गया। उन दिनों सिनेमा का टिकिट सवा दो आना यानि 15 पैसे हुआ करता था और मजा तो तब आता जब श्री देवीलालजी फिल्म लगने के दो या तीन बाद ऐलान करते आज की आज से एक टिकिट में दो आदमी सिनेमा देख सकेंगे बस यह जानकारी प्राप्त करने के लिए ही हम जब भी भोंपू से देवीलालजी बोलते हम उनके चेहरे को बड़े ध्यान से देखते और सुनते थे। धीरे-धीरे उन्होंने अपना खुद का पहला बैण्ड द्वारकाधीश बैण्ड के नाम से शुरू किया, जो आज भी उनके लड़के उस बैण्ड का संचालन करते हैं।

गणगौर की सवारी में सबसे आगे ऊंट पर दोनों और नंगाड़ों पर थिरकन पैदा करने वाली और सवारी के आगाज का आभास दिलाने वाली उनके नंगाड़ों की आवाज आज तक हमें याद है। सर पर किलंगी लगी पगड़ी, अंगरखी और धोती में नंगाड़ों की थाप बजती तो किसी राजसी ठाटबाट का अनुभव होता, अपनी मस्ती और फक्कड़पन में अपना सारा जीवन बीता 87 वर्ष की उम्र में 16 मई 2016 को ईश्वर को प्यारे हो गए, उन्हें हृदय से श्रद्धांजलि।

श्री गोटूलाल पालीवाल

नया बाजार कांकरोली स्थित श्री नवलारामजी पालीवाल के घर माता छगनी बाई की कोख से सन् 1919 में जन्मे श्री गोटूलालजी पालीवाल का बचपन अपने पिता की छत्रछाया और देखरेख में गुजरा। पिता द्वारकाधीश मन्दिर में काम किया करते थे। अत: श्री गोटूलालजी को अपने मन्दिर में ही ले जाया करते थे और अपनी देखरेख में छोटा मोटा काम उन्हें सिखाने के लिहाज से करवाते। मन्दिर में भी कई रास रंग के कार्यक्रम होते रहते थे। अत: पिताजी उन कार्यक्रम में नाचना गाना करवाते, विभिन्न प्रकार की वेषभूषा और कुछ अन्य कार्य भी करते, जब कुछ बड़े हुए तो उनका मन हुआ और वो मोटर चलाने का काम सीखने लगे और ड्राइवरी का लाईसेंस ले मोटर चलाने लगे। फिर उनके मन में न जाने क्या आया कि उन्होंने पिताजी को कह दिया मैं मोटर नहीं चलाऊंगा। पिताजी ने उन्हें साइकिल रिक्शा लेकर दे दिया, वे उसे चलाने लगे। कुछ समय बाद उससे भी उनका मन ऊब गया और वे घोड़ा और तांगा खरीदकर तांगा चलाने लगे। उन दिनों कांकरोली गांव में आवागमन के लिए बैलगाड़ी और तांगे के अलावा और कोई साधन नहीं था, बसें भी इक्का दुक्का ही चला करती थी, जो एक गांव से दूसरे गांव जाया करती थी। पर गांव के आस पास और गांव में आवागमन का साधन सिर्फ तांगा ही हुआ करता था और लोगों में पूरे गांव में 7 या 8 तांगे राजनगर व कांकरोली के बीच दौड़ा करते। पर कांकरोली से रेलवे स्टेशन उस समय एक ही रेल आवागमन का सबसे बड़ा साधन था, कांकरोली से रेलवे स्टेशन जाने का भाड़ा उस समय 2 आने यानि 12 पैसे था। उस समय आज तरह पक्की सड़क नहीं थी, न इतनी आवाजाही ही थी, कांकरोली चौपाटी के दो-चार दुकानें थी और वहां से निकलते ही खेत और जंगल प्रारंभ हो जाता था, तालेड़ी (नाला) से लगाकर रेलवे स्टेशन फाटक तक रास्ते के दोनों और ऊंची ऊंची घास (ऐरा) थी, तालेड़ी में पानी भरा होता था, तांगा हिचकोले खाता सवारियों को अपने गन्तव्य स्थल तक पहुंचाता था। उन्हीं दिनों लोगों ने तांगा छोड़ पैदल ही स्टेशन जाना प्रारंभ कर दिया। धीरे धीरे तांगे वालों की कमाई में फर्क पड़ने लगा, तभी गोटू दा को एक युक्ति सुझी। पुराने और बुजुर्ग लोगों को आज भी याद होगा कांकरोली में फैला था करू का रोग, गोटूदा ने कांकरोली भर में यह बात फैला दी कि तालेड़ी के अन्दर हेरा में एक ऐसे करू नाम का जानवर रहता है, जो लोगों को काट ले आदमी की मृत्यु हो जाती है, बस फिर क्या था बात चल निकली और लोग पैदल स्टेशन जाने को छोड़ फिर तांगे में जाने लगे। बहुत ही होशियार और चालाक थे गोटूदा, भरजी महाराज का किस्सा भी बुजुर्ग लोग भुले नहीं होंगे। कैसे विनोदी और मजाकिया भी थे गोटूदा, गांव की आन बान और इज्जत के लिए बड़े बड़े खतरा उठाने से भी नहीं हिचकिचाते थे गोटूदा, एक बार कहीं बाहर से कुछ नौजवान 30-40 की तादाद में कांकरोली घुमने आए और रात को सिनेमा देखने हॉल में गए। इसी दौरान एक नौजवान ने गांव की बाला को छेड़ दिया, बस फिर क्या था वे टूट पड़े उन लोगों पर और सिनेमा हॉल में उनका वो हाल किया कि वे नौजवान ऐसे भागते नजर आए जैसे गधे के सिर से सिंग। ऐसे बहादुर और निडर भी थे हमारे घोटूदा, गांव की छतरियों पर कुछ असामाजिक तत्वों ने कब्जा करने की कोशिश की, जिसकी गोटूदा को भनक लगी तो वहां जाकर खड़े हो गए और मजदूरों के साथ खुद नाजायज कब्जे को गिराकर रातोंरात परकोटा बनाना प्रारम्भ कर दिया।

गणगौर पर्व के तो वे बेहद दीवाने थे, गणगौर पर थानेदार की ड्रेस पहन मुंह में सिटी लिए पूरे गणगौर सवारी का एक सिरे से दूसरे सिरे तक सुचारू और योजनानुसार संचालन करने के लिए कड़ी मेहनत करते, लोग उनकी चुस्ती और फुर्ती और नियंत्रण की कला के कायल थे। उनके जाने के बाद जब भी सवारी निकलती तो स्वत: ही उनका चेहरा नजरों के सामने घूम जाता है। 1 जनवरी 2006 को मेरे गांव के ऐसे चतुर चालाक, निडर और बहादुर महापुरूष को ईश्वर ने अपने पास बुला लिया। गांव के ऐसे सपूत को नमन करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार कांकरोली
मो. 98284-75288

राजस्थानी केणावतां

भाषा और साहित्य में सुंदरता, सजीवता लाने के लिए कहावतों का प्रयोग होता आया है, कहावतों की जननी मनुष्य जीवन की समस्याएं हैं, जिस प्रकार एक विद्वान वेद, गीता के उदाहरण देता है, उसी प्रकार साधारण आदमी अपनी बात कहावतों से पक्की करता है, राजस्थानी कहावतें अनमोल है, यह जनजीवन के व्यवहार की कसौटी है।

घर का जोगी जोगना आन गांव का सिद्ध

अर्थात् – स्थानीय व्यक्ति को कम महत्व देना, जबकि बाहरी को अधिक सम्मान देना।

बकरा री मां कतरा थावर टाळे

अर्थात् – आई हुई विपत्ति को कुछ समय के लिए टाला जा सकता है, परंतु समाप्त नहीं किया जा सकता है।

कियो कुमार गदेड़ा पे नी बैठे

अर्थात् – कोई व्यक्ति किसी के कहने के अनुसार कार्य नहीं करता (अच्छी सलाह नहीं मानता), बाद में भले ही कर लेता है।

राबड़ी रांड केवे म्हनै दांता सूं खावो

अर्थात् – कोई कम महत्व का आदमी विशेष सम्मान प्राप्त करना चाहता है।

पराई हांसी गोळ ऊं मीठी

अर्थात् – दूसरों की हंसी उड़ाने में बड़ा आनंद आता है, लेकिन जब स्वयं पर बितती है, तब पता चलता है।

एक तो करेलो, दूजो नीम चढ्यो

अर्थात् – पहले तो स्वयं में इतनी कटुता, फिर और कटु व्यक्ति की संगति, दोहरे दुर्गुण हो जाना।

कार्तिक की छांट बुरी, बणिया की नाट बुरी
भायां की आंट बुरी, राजा की डांट बुरी

अर्थात् – कार्तिक महीने (नवंबर) की वर्षा बुरी, बनिए की ना (नहीं) बुरी, भाइयों की अनबन बुरी और राजा की डांट– डपट बुरी।

आळस- नींद किसान ने खोवे, चोर ने खोवे खांसी,
टक्को ब्याज मूळ ने खोवे, औरत ने खोवे हांसी।

अर्थात् – किसान को निंद्रा, आलस्य मनुष्य को नष्ट कर देता है, खांसी चोर का काम बिगाड़ देती है, टका रुपए का (ऊंची दर का) ब्याज मूल को भी ले बैठता है और हंसी मसखरी औरत को बिगाड़ देती है।

दूर जंवाई फूल बरोबर, गांव जंवाई आधो,
घर जंवाई गधे बरोबर, छावे जिंया लादो।

अर्थात् – दूर रहने वाले (कभी–कभी आने वाले) दामाद का अधिक सम्मान होता है, गांव में रहने वाले का आधा, घर जंवाई की कद्र तो गधे के बराबर ही रह जाती है।

आम फळे नीचे लुळे, ऐरंड अकाशा जाए

अर्थात् – धीर गंभीर व्यक्तित्व वाले आदमी संपत्ति या प्रभुता पाकर नम्र हो जाते हैं, जबकि छिछलेऔर ओछे व्यक्ति अधिक इतराते हैं।

लाडू री कोर में कुछ खारो कुण मीठो

शब्दार्थ : लड्डू के ग्रास में कौनसा भाग खारा व कौनसा मीठा।

अर्थात्– बगैर पक्षपात के सभी के साथ समान व्यवहार करना, सबको एक जैसा मानना।

जणीरी लाठी, वणीरी भैंस।

अर्थात् – जिसके पास ताकत है, माल भी उसी का है।

एक बार एक करसों ;किसानद्धआपणी भैंस ने ले र दूजे गांव जा रियो होए वणी रा एक हाथ में लाठी ही ।जंगल रा गेला में जाती टेम एक ठग वणीरे लारे वेग्यो ।ठग करसां रे लारे वातां करतो चालतो रियोएठग कयो थांरी भैंस धीरे चाल री मने लाठी दे मूं भैंस ने चला वां में थारी मदद करुंए करसे आपणी लाठी ठग ने दीएठग हाथ में लाठी ले भैंस रे पाछे चाल तो रियोए चालता.चालता एक गांव आयोएठग करसां ने कयों आ भैंस तो म्हारी हैएकरसों बोल्यो भैंस तो म्हारी हैएदोई जणा लड़वा लागाएवणाने लड़ता देख गांव रा मोतबीर पंच भेळा वेग्याएकरसों बोल्यो भैंस मारी हैएठग बोल्यो मूं भैंस ओर लाठी ले र गेले व्यों देखों म्हारा हाथ में लाठी हैएपंचा आपस में विचार किदो जो भैंस ने घर सूं ले र निकळे लाठी तो वणी रे हाथ में वेंए पंचा न्याव कीदो जणी रां हाथ में लाठी भैंस तो वणी की वेए करसां री वात कोई नी हुणीएठग भैंस ने ले र गेले व्योएकरसों बापड़ो खाली हाथ आपणे घरे ग्यो। जदीउं या कहावत चाल गी। **जणी री लाठी वणीरी भैंस।**

रामगोपाल आचार्य
कवि एवं शिक्षाविद्,
पीपली आचार्यान, राजसमंद
मो. 99292-15040

कांकरोली के संजय का फ्रांसिस पब्लिकेशन अमेरिका द्वारा लेखन के लिए चयन

राजसमंद. भवानी नगर कांकरोली के डॉ. संजय गौड़ का टेलर एवं फ्रांसिस पब्लिकेशन अमेरिका द्वारा लेखन के लिए चयन किया गया है। गौड़ द्वारा प्रस्तावित अंतरराष्ट्रीय किताब इंडस्ट्री 4.0 रिसर्च ट्रेंड चैलेंज एवं फ्यूचर ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन डाटा साइंस को टेलर एंड फ्रांसिस ग्रुप पब्लिकेशन फ्लोरिडा अमेरिका द्वारा चयनित किया गया है। उक्त पुस्तक को डॉक्टर संजय गौड़ अन्य राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के साथ इसी वर्ष में पूर्ण करेंगे। इस हेतु विश्वभर से 40 से 50 शोधार्थियों प्रोफेसर एवं औद्योगिक विशेषज्ञों के शोध परिणाम की मदद भी ली जाएगी। यह किताब विश्व स्तरीय इंडेक्स स्कोपस एवं वेब ऑफ साइंस से भी मान्य होगी। उक्त किताब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डाटा साइंस से संबंधित भविष्य के आयामों पर शोध परिणाम का उद्योग, व्यवसाय, तकनीकी, सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, गवर्नेंस सहित संबंधित क्षेत्रों में मार्गदर्शन करेगी। गौरतलब है कि डॉ. संजय गौड़ अब तक 95 से अधिक शोधपत्र सहित 7 तकनीकी पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। साथ ही कई अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में मुख्य वक्ता के रूप में अपना वक्तव्य दे चुके हैं और विशेष सत्रो का विदेशों में आयोजन भी कर चुके हैं। साथ ही 2020 मे आयोजित विश्व एज्युकेशन समीट मे वक्तव्य हेतु सम्मानित हो चुके हैं।

पुरुषोत्तम शाकद्वीपी ने किया कोविड-19 पर शोध

राजसमंद. रूसी भारतीय मैत्री संघ दिशा मास्को (रूस) एवं हिन्दी साहित्य की त्रेमासिक सृजन पत्रिका (इंदु संचेतन) चीन द्वारा प्रवासी भाषा, साहित्य और समाज विषय पर आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (वैबिनार) 13 व 14 मई 2020 को आयोजित की गई। इसमें उदयपुर के पुरुषोत्तम शाकद्वीपी ने भाग लिया और ग्रामीण विकास पर कोविड-19 का परिणाम विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

समसामयिक प्रश्नोत्तरी

प्रस्तुति : परितोष पालीवाल 82338 82818

1. हाल ही में पश्चिम बंगाल के तट से टकराने वाले तूफान का क्या नाम है?
2. दूरदर्शन के कई नाटकों एवं अंग्रेजी मीडियम, पीकू, हिन्दी मीडियम जैसी फिल्मों में काम करने वाले अभिनेता जिनका हाल ही में निधन हो गया है, का क्या नाम है ?
3. पठान परिवार में जन्मे राजस्थान के कलाकार जिनका हाल ही में निधन हुआ किस शहर के हैं?
4. मध्यप्रदेश में कमलनाथ सरकार को गिराकर मुख्यमंत्री पद हासिल करने वाले नेता का नाम क्या है?
5. देश में लॉकडाउन कितनी तारीख को लगाया गया?
6. अनलॉक 1.0 कितनी तारीख से शुरू हुआ?
7. हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी ने प्रशांत महासागर के किस महाद्वीप के राष्ट्राध्यक्ष से ऑनलाइन चर्चा की?
8. अमेरिका ने हाल ही में भारत को विश्व स्तरीय किस समूह में शामिल करने की वकालत की?
9. नेपाल के साथ सीमा विवाद वाला क्षेत्र लिपुलेख काला पानी आदि किस राज्य में है?
10. लद्दाख के किस क्षेत्र में हाल ही में चीन ने घुसपैठ की है?
11. हाल ही में अमेरिकी धरती से मानव मिशन को स्पेस में भेजा गया है। यह अभियान किस कंपनी पूरा किया है?
12. उस दवा का नाम बताइए, जिसे कोरोना के खिलाफ जंग में भारत ने विश्व को भेज कर मदद की है?
13. मुंबई से अपने स्तर पर प्रवासी मजदूरों को गांव भेजने का अभियान चलाने वाले अभिनेता का नाम बताइए?
14. हाल ही में बड़े विदेशी निवेशो के लिए भारत की कौनसी कंपनी चर्चा में रही है?
15. हाल ही में अपनी कंपनियों पर से कर्ज उतारने के लिए राइट इश्यू लाने वाली भारतीय कंपनी का नाम बताइए?

उत्तरमाला

(1) अम्फान (2) इरफान खान (3) इरफान खान जयपुर
(4) शिवराजसिंह चौहान (5) 24 मार्च 2020
(6) 01 जून 2020 (7) Australia (8) G7 समूह
(9)उत्तराखंड (10) फाइव फिंगर क्षेत्र (11) स्पेस एक्स
(12) hydroxychloroquine (13) सोनू सूद मूलत: पंजाब के
(14) रिलायंस jio platformsl (15) Reliance Industries

वर्णन सुन्दरता का

कैसे लिखूं तेरी सुंदरता को?
अब तू ही बता!
कैसे करूं शृंगार तेरा?
अब तू ही बता!
माथे का चमकता बोर लिखूं या
तेरे माथे का, मैं मोड़ लिखूं?
आंखों पर पर्दा जुल्फ लिखूं या
पवन बहाती जुल्फे लिखूं?
आंखों की कोमल पलकें लिखूं या
आंखों का तेरी, मैं काजल लिखूं?
तेरी आंखों में छाया प्रेम लिखूं या
आंखों की तेरी शैतानियां लिखूं ?
गुलाब से सौम्य गाल लिखूं या
गोरे- गोरे गाल लिखूं?
चटपटी- स्वादिष्ट रसिका लिखूं या
प्रेम रस भरे, होठ लिखूं?
कानों को शोभित बाली लिखूं या
झुमके निहारतीं दुल्हन लिखूं?
ध्रुव तारे सी नथनी लिखूं या
मेरी नाक का, नाक लिखूं ?
टिमटिमाते तेरे दांत लिखूं या
प्यार भरी मुस्कान लिखूं?
गले का सुन्दर, हार लिखूं या
दर्पण सा पावन कंठ लिखूं?
बांहों का तेरा 'बल' लिखूं या
अद्भुत 'बाजूबन्ध' लिखूं ?
कलाई की तेरी घड़ी लिखूं या
अंगुली की तेरी मैं अंगूठी लिखूं?
हाथों में रची मेहंदी लिखूं या
मेहंदी में छुपा ष् मेरा नाम ष् लिखूं?
कोमल तेरी काया लिखूं या
आलिंगन का प्यार लिखूं?
लहराती- बलखाती कमर लिखूं या
कणकती, सटका कंदोरा लिखूं?
पैरों की चमकती बिछियां लिखूं या
छम-छम करती पायल लिखूं ?
और अंत में...
मैं खुद को तुम्हारा वैभव लिखूं या
तुम्हारे जीवन की विजय लिखूं?
बड़ी खूबियां है तुझमें में ऐ गौरी...
अब तू ही बता मैं क्या लिखूं?

विजय पालीवाल, धर्मेटा

कोरोना

हम लड़ेंगे और जीतेंगे
परास्त होगा कोरोना
एकजुट हैं, एकजुट हो
लोगों को जागरूक करेंगे
घर में रहे स्वच्छता
इसके लिए मजबूर करेंगे
बार-बार धोए हाथों को
साबुन इस्तेमाल करेंगे
नहीं करेंगे भीड़ सडकों पर
दर्शन यात्रा से बचेंगे
रहेंगे अपने ही घरों में
मन को विचलित नहीं करेंगे
लेंगे संकल्प स्वच्छता का
जन-जन को जागरूक करेंगे
बालक बूढ़ों के स्वास्थ्य का
पूरा पूरा ख्याल रखेंगे
नहीं निकले हम अपने घरों से
घर में रहकर काम करेंगे
साग सब्जी या उपचार पर
ही घर से बाहर निकलेंगे
भीड़ नहीं हो कहीं पर भी
संभलकर हम प्रयत्न करेंगे
साथ देंगे सरकारों का
हर निदेशों का पालन करेंगे
हम जीतेंगे, हारेगा कोरोना
देश को समृद्ध करेंगे
राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में
संभलकर हम सब काम करेंगे
जय हो हिदुस्तान,
विजय होगा हिन्दुस्तान

डॉ एम.डी. कनेरिया
वरिष्ठ साहित्यकार, नाथद्वारा

कोरोना पर दोहे

कोरोना ललकारता, बन कर मृत्यु दूत।
पूछ रहा वो फेफड़े, किसके हैं मजबूत।।

कोरोना ये कह रहा, भूलो 'टिट- फॉर- टेट'।
कर लो भारत देश के, सिस्टम को फॉर्मेट।।

धर्म और विज्ञान का, हो जाए ग़र मेल।
मिटें अंधविश्वास के, आदम युग के खेल।।

कोरोना की सज रही, गली- शहर में हाट।
बिना दाम वो बिक रहा, बिना तराजू बाट।।

कोरोना के भेस में, बोल रहा है काल।
तू इन्सां के रूप में, मानव खुद को ढाल।।

हर संकट करता रहा, हर युग को आगाह।
उसकी दृष्टि एक सी, क्या निर्धन क्या शाह।।

नहीं सफर में चाहिए, अब हाथों में हाथ।
छह फीट की हों दूरियां, ग़र रहना हो साथ।।

सारा 'मेड इन चाइना', रोगों का सामान।
ख़ालिस 'मेड इन इंडिया', दिल-जिगर और जान।।

कोरोना चला 'वुहान' से, फैला सकल जहान।
हैंडवाश और मास्क से, कर दो ख़त्म निशान।।

जो दुबका आवास में, जिसने छोड़े काज।
कोरोना से जीत का, उसके सर पर ताज।।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
सरदारपुरा, उदयपुर

व्यंग्य

मुर्गे के आंसू

आदमी को मुर्गा बनाया जाता है। आदमी मुर्गा बनता है, लेकिन खाया मुर्गा जाता है। आदमी ही मुर्गा खाता है, आदमी मुर्गे की तरह बांग देता है। बॉस, मालिक, मंत्री, पत्नी के सामने। रोज-रोज बांग देकर भी नहीं थकता। बांग देने में मुर्गत्व, का भान होता है। आदमी को मुर्गे से कोई सहानुभूति नहीं होती। मुर्गे की मां ने कभी शिकायत नहीं की कि मुर्गे को राष्ट्रीय उभयचर प्राणी घोषित किया जाए। उसे किन्नर प्रजाति से बाहर निकाला जाए। उसे या तो मवेशी माना जाए या पक्षी। जब आदमियों में किन्नर हो सकते हैं, मवेशियों और पक्षियों में क्यों नहीं हो सकते? मुर्गा किन्नर नहीं है, लेकिन किन्नर बनना चाहता है। उसकी इज्जत किन्नर से भी बदतर है।

मुर्गा व्यवस्था का प्रतीक है। जब चाहो गुड़ के डिब्ले की तरह कुटक लो। जब भी कोई महोत्सव होता है, व्यवस्था को चबा-चबाकर खाया जाता है। किसी भी उत्सव में, हिन्दू, मुसलमान, सिख ईसाई समान रूप से मुर्ग मुसल्लम से लेकर मुर्गा तंदूरी तक व्यवस्था की तरह आराम से चबा- चबाकर खाते हैं। मुर्गा भ्रष्टाचार का प्रतीक है, जिसे हर कोई पकाना और खाना चाहता है। रिश्तेदारों को परोसना चाहता है। व्यवस्थाा के भ्रष्टाचार में जिस तरह रिश्तेदारों का हिस्सा होता है ठीक वैसे ही।

बकरे पर तरस आता है, मोर पर तरस आता है, गाय को तो सभी आदर सम्मान से आंसू भी बहाते देखते हैं। यहां कोई मतभेद नहीं है, भैंसा भी काटा जाता, ऊंट तक को लोग नहीं छोड़ते, लेकिन मेरी सहानुभूति मुर्गे से ज्यादा है। शादी ब्याह से लेकर श्मशान तक मुर्गे की डिशेश के बारे में बात होती है। कैसे पकाया जाए कैसे खाया? मुर्गा टांग नहीं अड़ाता, लेकिन उसकी टांग की चर्चा रेस्तरां से लेकर साहब की पार्टी तक होती है। मुर्गा दारू पीता नहीं है, लेकिन पीने के साथ मुर्गे के होने से पीने का महत्व बढ़ जाता है।

मुहावरे मुर्गे पर नहीं बने। मुर्गे की मां कब तक खैर मनाएगी, कोई नहीं कहता। कहीं बली की बात हो तो मुर्गे आगे खड़ा कर दिया जाता है। सस्ती, स्वादिष्ट दारू के साथ, साहब के साथ, जमाई के साथ। महोत्सव कोई सा हो मुर्गे की खैर नहीं। मुर्गे के साथ भी और मुर्गे के बाद भी केवल मुर्गा ही मुर्गा।

खैर घूरे के भी दिन बदलते हैं, वैसे ही जब बर्ड फ्लू आता है, तो मुर्गा परिवार का सम्मान बढ़ जाता है। कुछ दिनों तक आदमी के दांतों से बच जाता है तो कहीं मुर्गी के अंडों को घूरे पर फेंक दिया जाता है या फिर जमीन में गाड़ दिया जाता है। बर्ड फ्लू मुर्गो का त्योहार होता है। दड़बों की साफ सफाई की जाती है, दाना धुला और

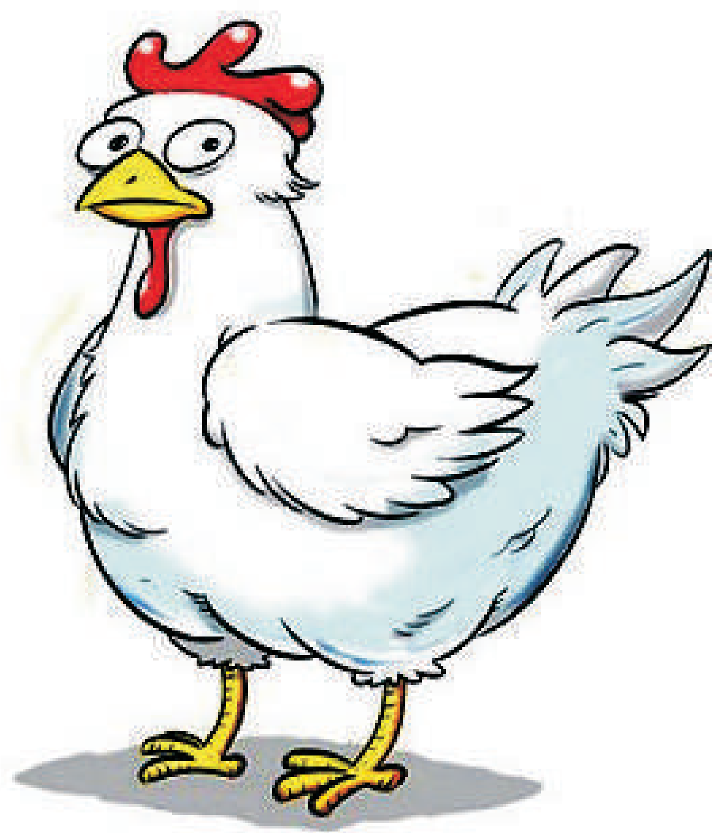

साफ किया हुआ दिया जाता है। विशेष खातिरदारी की जाती है, विशेष सफाई का ध्यान रखा जाता है। फिर भी कोई मुर्गे के आंसू कोई नहीं देख पाता।

मुर्गे के आंसू मैंने देखे हैं, एक दिन एक मुर्गे ने मुझसे फरियाद की, आपका सण्डे होता है, वैसे ही एक दिन मुर्गे का भी सण्डे हो और मुर्गियों के साथ बैखौफ दड़बे से बाहर बगीचे में या मगरे पर जाकर बांग दे सके। तुम अभिव्यक्ति की आजादी की बात करते हो, धरना देते हो, चक्का जाम करते हो। मुर्गे कभी किसी धरने या चक्का जाम में शामिल नहीं होते। हे इन्सान संतान सप्ताह में एक दिन मुर्गों को भी आजादी से जीने दिया जाए।

सुनील जैन राही
पालम गांव, नई दिल्ली
मो. 9810 960 2885

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती..

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
3 वर्ष	36	720	220	200 रुपए

जयवर्द्धन 3 वर्ष की बुकिंग से 220 रुपए की महाबचत

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

नियम और शर्ते :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

भारत की गौरवमयी गुरुकुल परंपरा

भारत के गौरवमय अतीत के मुख्य आधार हैं हमारे वेद, जो भारत में आदिकाल से उच्च स्तरीय संस्कृति के प्रतीक हैं। वेदों के साथ पुराण, गीता व सर्व-विषयमयी ज्ञान परंपरा इस विस्तृत श्रृंखला का मुख्य आधार है- संस्कृत भाषा। इसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाने की व्यवस्था एवं नवीन पीढ़ी के शिक्षण हेतु की गई व्यवस्था एवं गुरुकुल प्रणाली। शिक्षा के साथ संस्कृति, संगीत, श्रृंगार, शास्त्र, ज्योतिष को आगे बढ़ाने वाली मंदिर प्रणाली तथा शास्त्र, प्रभु-भक्ति व ज्ञान को बढ़ाने वाली कथा, व्रत एवं यज्ञ-हवन की व्यवस्था आदि।

भारत में एक समृद्ध व्यवस्था थी, जिसे मैकाले जैसे अंग्रेज शिक्षाविदों ने अपने पिता व सरकारी अधिकारी के समक्ष ये सिद्ध कर दिया कि भारतीय व्यवस्था इतनी सुदृढ़ है कि इस संस्कृति को नष्ट किए बिना बदला नहीं जा सकता। हम भारतीय समन्वय में इतने माहिर है कि तमाम नवीनता, परिवर्तन व आधुनिकता के बावजूद अपना अतीत, अपनी संस्कृति को बचा ही लेते है। ऐसा ही एक व्यापक बदलाव हमारे देश में शिक्षा व्यवस्था में आया। इस बदलाव ने राजनैतिक, आर्थिक व बौद्धिक व्यवस्थाओं में तेजी से आमूल-चूल परिवर्तन ला दिया। नवीन व्यवस्थाओं को हमने आधुनिकता की दौड़ व होड़ में अपना तो लिया, परन्तु आज हम अपने आप को ठगा सा महसूस कर रहे हैं। युवा दिग्भ्रमित है, बेरोजगारी विकराल रूप ले चुकी है, संस्कृत व विरासत संकट में प्रतीत होती है और समाधान की सीढ़ी बहुत संकरी है। सरकार व आमजन इसका समाधान नहीं कर पा रहे हैं।

आइए इस पत्र के द्वारा भारत की गौरवमयी गुरु परंपरा को समझें। उसके लाभ-हानि का विश्लेषण करें। उनके समाप्त होने की परिस्थितियों पर विचार कर वर्तमान शिक्षण प्रणाली में उसे पुनः प्रतिस्थापित करने की संभावनाओं पर एक निष्पक्ष दृष्टि डालें तथा इसके वैकल्पिक मार्ग तलाशें।

आइए सर्वप्रथम गुरुकुल व्यवस्था पर दृष्टिपात करें। भारत में 18वीं एवं 19वीं शताब्दी तक गांव-गांव में शिक्षा केंद्र गुरुकुल थे। लगभग हर गांव में एक गुरुकुल होता था और भारत में सात लाख गुरुकुल थे। इनमें वानप्रस्थी गुरु अपनी विद्या अगली पीढ़ी को निःशुल्क देते थे। विद्यार्थियों का भोजन गांव से आता था तथा शिक्षा पूर्ण होने के अंत में शिक्षक गुरु दक्षिणा लेते थे। आश्रम व्यवस्था के अनुसार बालक 20-25 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करता। फिर नौकरी व परिवार में 50 वर्ष तक लिप्त रहता। वानप्रस्थी बनकर गुरुकुल चलाता और 70-80 वर्ष के बाद संन्यास लेकर ईशचिंतन व निज उद्धार में लग जाता। गुरुकुल व्यवस्था ब्रह्मचर्य व वानप्रस्थ दो आश्रमों का केंद्र थी। इसके माध्यम से समाज के अनुभवी शासक, गुरु व माहिर व्यक्ति अपना ज्ञान नई पीढ़ी तक पहुंचाते थे। इतिहास में गुरुकुलों का व्यापक वर्णन आता है। पांडवों व कौरवों ने गुरु द्रोणाचार्य से धनुष विद्या सीखी। श्री कृष्ण व बलराम ने उज्जैन में गुरु संदीपनी से क्रमशः कृषिकार्य व राजनीति सीखी। बलराम इसीलिए हलधर कहलाए व कृष्ण राजनीतिज्ञ व कूटनीतिज्ञ बनकर महाभारत के रणनीतिकार बने थे। श्री राम ने विश्वामित्र व वशिष्ठ से ज्ञान प्राप्त किया था। गार्गी ने पति व गुरु याज्ञवल्क्य से। मध्यकाल तक गुरुकुल कायम थे, जिनमें वेद

पाठ, शास्त्र अध्ययन एवं आजीविका का साधन सिखाया जाता था। इसमें सांस्कृतिक संवर्धन मुख्य था और आजीविका भी शामिल थी। शिष्य व गुरु के संबंध प्रगाढ़ थे। शिक्षा आवासीय तथा प्रायोगिक ज्ञान पर आधारित थी। आज भी संत गुरु इसी पद्धति से शिक्षा दे रहे हैं।

बिरजू महाराज, पंडित रविशंकर, मल्लिका साराभाई इन समस्त संगीत गुरुओं के अभी भी ऐसे संस्थान चल रहे हैं, जहां गुरु शिष्य परंपरा के अनुकूल ज्ञान दिया जाता है। इसमें शिष्य गुरु के पास रह कर बैठ कर निरंतर एक ही विद्या पूर्ण गहराई से सीखता है व अपने फन का माहिर बनकर आश्रम छोड़ता है। इससे वह एक विषय में गुरु बनता है और दूसरे के रोजगार में आड़े नहीं आता।

इसके ठीक विपरीत अंग्रेजी सरकार के समय से चली शिक्षा पद्धति का रूप हम सभी जानते हैं, बचपन से ही बालक को अनेक विषय, ढेर सारी पुस्तकें, पीरियड में बंटे ज्ञान के घंटे, बार-बार बदलते अध्यापक, अनेक विषयों में भटकता विद्यार्थी, पांच वर्ष से पच्चीस वर्ष तक अध्ययन करने के बाद भी किसी एक विषय, नौकरी या ज्ञान का माहिर नहीं बनता। हर तरह की नौकरी के लिए आवेदन करता फिरता है और उसके लिए फिर अलग पढ़ाई करता है, तो फिर काम कुछ और ही करता है।

शिक्षा में ये बदलाव कैसे आया व हमारी शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल कहां चले गए? आइए इस पर दृष्टिपात करते हैं- भारत की शिक्षा व्यवस्था पर अंग्रेजी शिक्षा थोपने के लिए अंग्रेजों ने सोच-समझ कर साजिश की। उनका शासन था। 1830 व उससे पहले अंग्रेज सरकार ने दो बड़े देशव्यापी सर्वेक्षण करवाए व देश के गुरुकुलों का पता लगाया। फिर दो कानून पारित किए जिनमे एक के अंतर्गत भारतीय गुरुकुलों को अवैध घोषित कर दिया गया, गुरुओं को मार कर भगाया गया और गुरुकुलों में आग लगा दी गई व हमारे ग्रंथों को भी भारी नुकसान पहुंचाया।

इन सबके स्थान पर औपचारिक स्कूल, मिशनरी व विश्वविद्यालय कायम किए। नए विषय लागू किए। स्कूलों में भाषा, गणित, विज्ञान व सामाजिक ज्ञान विषय चलाए। पीरियड व्यवस्था कायम की, अनेक विद्यार्थी, अनेक गुरु और अनेक विषय हो गए। ज्ञान की गहराई छूट गई व विस्तार बढ़ गया।

मुंबई के डॉ. अनुज ने ऐसा एक वीडियो मीडिया में चलाया, जिसे देखकर मेरा जमीर जागा। मैंने इस पर गहन दृष्टि डालना आरम्भ किया। मैंने शोध किया व पता लगाया कि राजसमंद नाथद्वारा में मंदिर की और से शुद्धाद्वैत हिंदी संस्कृत पाठशाला चलती थी। हमारे नाना व दादा गुरु थे। फिर मंदिर वालों ने बालकृष्ण जी के नाम पर विद्यालय भवन चलाया व शिक्षा का रूप बदल गया। आज वे पुराने विद्यालय व विद्या विभाग बंद हो गए हैं। उनके स्थान पर रंगभेद रहित विद्यालय आ गए। शिक्षा सार्वजनिक हो गई व विद्वत् परंपरा नष्ट हो गई। हमारे पूर्वज, पूजा-अर्चना, साहित्य संकलन, शिक्षण व कथा-वार्ता सभी एक साथ करते हैं। हम प्रतियोगिता के माध्यम से औपचारिक स्कूल, कॉलेज में पढ़े व व्याख्याता आचार्य बने। हमें दूर-दूर कॉलेजों में पढ़ाने भेज दिया गया। अपने विषयों से बंधे निश्चित पाठ्यक्रम तक टिक गए। विद्यार्थी अध्ययन के प्रति गंभीर नहीं है। पीरियड के बिना हम ज्ञान दे नहीं सकते। सरकारी काम व योजनाएं इतनी है कि अध्ययन को नियमित रख पाना बहुत मुश्किल हो गया है। बची-खुची कमी मोबाइल ने पूरी कर दी।

हमारी गुरुकुल प्रणाली बहुआयामी व गहरी थी। आज की पद्धति बहुआयामी बिखराव लाने वाली तथा भटकाव लाने वाली है। बचपन में बालक पांच से आठ विषय पढ़ता है। माध्यमिक शिक्षा में तीन विषय और उच्च शिक्षा में भी तीन विषय पढ़ता है। जिसका प्रतिशत हमारे देश में मात्र दस-बीस प्रतिशत है। तीन विषय दो-दो पेपर, पांच-छह पीरियड, पांच-छह गुरु, दस-बीस गतिविधियां, तीन-चार संस्थान, दो-तीन कोर्स, दो-दो कोचिंग क्लास, तीन-चार प्रतियोगिताएं हैं। विद्यार्थी शिक्षा, नौकरी व संतोष-असंतोष के भंवर में फंस गया है। आज शिक्षा के मायने बदल गए हैं। पढ़कर आईएएस अधिकारी, बाबू-पटवारी बनना, इंजीनियरिंग करना, विदेश चले जाना, डॉलर कमाना व ऐशो-आराम की जिंदगी जीना। धन कमाने के लिए सभी प्रकार के समझौते करना व अपनी जीवनशैली को उन्नत बनाना। इस सब प्रयास में हम भारतीयों से क्या-क्या दूर छूट गया। इस पर भी एक दृष्टि डालें। हमारा प्राचीन ज्ञान व शिक्षा कहां गई? पुस्तकें व पुस्तकालय उपेक्षित हैं। प्रकाशक कोर्स की किताबों के अतिरिक्त कम ही छापते हैं। लेखन व भाषा कुंठित हुई है। संस्कृत व हिंदी का तेजी से नुकसान हुआ है। नई पीढ़ी मोबाइल व कंप्यूटर से अंग्रेजी की आदी हो गई है। कॉलेज, स्कूलों में भी इंग्लिश मीडियम को बढ़ावा मिल रहा है। आधुनिक का दंभ भरते हुए हम सभी सहन कर रहे हैं तथा यह भी समझ रहे हैं कि जो श्रेष्ठ स्वर्णिम युग था, वह कहीं पीछे छूट गया है।

प्रत्येक भारतीय के मन में अपने गौरवमयी अतीत के छूट जाने का मलाल है। तंद्रा तोड़ने वाले एक युगपुरूष की तलाश है तथा आधुनिकता की बेड़ियों को तोड़ने की अपेक्षा है। इस बदलती व्यवस्था में हमारी प्राचीन विरासत के प्रतिमानों की पुनर्स्थापना कैसे हो इस पर चिंतन अति आवश्यक है।

यहां कतिपय सुझाव दिए जा रहे हैं, इनके आधार पर हमारी आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को गौरवमयी गुरुकुल परंपरा से प्रतिपूरित किया जा सकता है। स्कूल-कॉलेज के भवन, शिक्षक व्यवस्था पाठ्यक्रम सभी इतना व्यापक है कि इसे नकारना संभव नहीं है परन्तु, अंतर्रचना व विषय सामग्री व शिक्षण शैली में परिवर्तन जरूरी है। आइए इन सुझावों पर दृष्टिपात करें-

भारत जो इतिहास में विश्वगुरु के रूप में जाना जाता था, उसकी छवि धूमिल हुई है। इसे परिष्कार करने हेतु कतिपय सुझाव प्रस्तुत हैं। यदि इन्हें लागू किया जाए, तो उच्च शिक्षा में संख्यात्मक व गुणात्मक सुधार हो सकेंगे–

1. भारत को विश्व गुरु की पदवी पर पुन: आसीन करने की योजना बनाने हेतु समस्त विश्वविद्यालयों के कुलपति, शिक्षा मंत्री, मुख्यमंत्री निरंतर विचार विमर्श कर संयुक्त प्रयास करें।
2. प्रदेश के विश्वविद्यालयों या सरकार विभिन्न संतों, विद्वानों, सेवानिवृत शिक्षकों, कलाकारों, पुरस्कृत व्यक्तियों व अलग–अलग विद्या के माहिर गुरुओं को पहचान कर उन्हें विश्वगुरु की उपाधि प्रदान करें व उन्हें अपने ज्ञान को आगे बढ़ाने हेतु स्वतंत्र गुरुकुल संचालित करने की व्यवस्था करें।
3. देश के कोने–कोने में फैले ज्ञान को पुस्तकालयों, संग्रहालयों, गुरुकुल के माध्यम से जिला, प्रदेश, देश और फिर विश्व तक फैला कर भारत को विश्व गुरु की पदवी पर पुन: आसीन करें।
4. विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित पाठ्यक्रम गंभीर, गहन व विषय का पूर्ण ज्ञान कराने वाले हों, व्यवहारिक ज्ञान से जुड़ें हों, विद्यार्थी को विषय में माहिर बनाने वाले हों, पल्लवग्राही ज्ञान न हों, गहरा अध्ययन हो।
5. कम्प्यूटर, पर्यावरण, हिंदी व अंग्रेजी के पूर्ण, गहन व पूर्ण कोर्स की व्यवस्था हो। कंप्यूटर का व्यवहारिक ज्ञान दिया जाए। प्रत्येक विषय के पर्याप्त अध्यापक नियुक्त किए जाएं।
6. इन विषय को अनिवार्य के स्थान पर ऐच्छिक कर दिया जाएं।
7. 12वीं के बाद उच्च शिक्षा में तीन के स्थान पर एक ही विषय रखकर उसका विस्तृत ज्ञान दिया जाए। इससे व्यक्ति एक ही क्षेत्र में जाएगा, जिससे बेरोजगारी की समस्या का समाधान होगा। विद्यार्थी Jack of all master of none के स्थान master of one बनेगें। डिग्री का महत्व बढ़ेगा।
8. सरकार विभिन्न विभागों के रिक्त पदों के लिए विश्वविद्यालयों या महाविद्यालयों से निकले विद्यार्थियों को चयनित करें। विश्वविद्यालयों में डिग्री के साथ नौकरी भी बांटी जाएं।
9. पाठ्यक्रम में दो प्रश्न पत्र के स्थान पर एक प्रश्नपत्र हो उसी में अनेक इकाई के अनुसार अंक विभाजन हो। इससे कक्षा, व्याख्याता, परीक्षा तिथियों व अध्यापन जैसी समस्याएं हल होंगी। परिणाम शीघ्र आएंगे।
10. प्रत्येक विषय का पाठ्यक्रम तथा विषयवस्तु व अध्ययन निर्देश, संपूर्ण ज्ञान नेट पर विश्वविद्यालय उपलब्ध कराएं, ताकि स्वयंपाठी, निजी व रेगुलर विद्यार्थी अध्यापक के अभाव में भी अध्ययन कर सकेंगे या प्रवेश कार्य भरने वाले को एक सीडी उपलब्ध कराई जाए। पासबुक संस्कृति को समाप्त किया जाए। पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण, रोजगार के अवसर व कैंपस पोस्टिंग को भी सम्मिलित किया जाए।
11. महाविद्यालों में एक गुरु, एक कक्ष या एक विषय, एक कक्ष का पैटर्न बनाया जाए, ताकि अध्यापक से विद्यार्थी का निरंतर संपर्क रहे। पीरियड की बाध्यता समाप्त हो, इससे विद्यार्थी के लिए अध्यापक की उपलब्धता बनी रहेगी।
12. प्रत्येक रिक्त पद भरा जाए। रिक्त पद से दोगुनी नियुक्ति की जाए। उच्च शिक्षा केंद्र दो शिफ्टों में चले व दोगुने विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाए।
13. योग, खेल, संगीत, NSS, NCC, YDC व अन्य प्रवृति हेतु पढ़ाई के अतिरिक्त एक कालांश हो, ताकि पढ़ाई बाधित ना हो। साथ ही इन प्रवृतियों के स्वतंत्र प्रभारी नियुक्त किए जाएं ताकि अध्ययन व प्रवृति बाधित ना हो।
14. उच्च शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से व्यापक नियुक्तियां देकर युवाओं को भारतीय संस्कृति, संस्कृत, योग, ज्योतिष, शास्त्रीय संगीत, समाज सेवा के कार्य में नियुक्त किया जाए। ये युवा पहले दुनिया की जरूरत पूरी करेंगे। फिर विश्वभर में गुरु के रूप में फैलकर भारतीय मूल विद्याओं का प्रचार, प्रशिक्षण व अध्यापन करेंगे। जिससे शीघ्र ही भारत विश्व गुरु बन सकेगा।
15. देशभर में संस्कृति व विरासत केंद्र, पुस्तकालय, संग्रहालय, पर्यटन केंद्र बनाकर युवाओं को संस्कृति विस्तार कार्यक्रम में लगाया जाए।
16. शिक्षा केंद्र, विद्यालय, मंदिर व जिला, तहसील मुख्यालयों पर ये संस्कृति केंद्र कार्य करें व युवाओं को रोजगार से जोड़ें।
17. विभिन्न पदों व प्रतियोगी परीक्षाओं का शिक्षण–परीक्षण व पदस्थापना विश्वविद्यालयों के माध्यम से हो जो इन नियमित कोर्स का हिस्सा बनें। इस प्रकार देश को शिक्षा प्रणाली को एक दिशा मिलेगी।
18. उच्च शिक्षा केन्द्रों में छात्रसंघ चुनाव सरकार तय नहीं करें वरन सर्वसम्मति से, मेरिट से प्राचार्यों को चयन की अनुमति दी जाए।

डॉ. रचना तैलंग
प्राचार्य एसआरके राजसमंद

2020 : नवीनतम प्रौद्योगिकी रुझान

वर्तमान परिवेश में तीव्रगति से तकनीकी क्षेत्रों में अविश्वसनीय परिवर्तन हो रहे हैं। सभी तकनीकी परिवर्तन मानव की कार्यकुशलता बढ़ाने की दिशा में उल्लेखनीय कदम है। वर्ष 2020 में अपने वर्चस्व के चरम तक पहुंचने वाली कुछ प्रमुख तकनीक जिनका संबंध सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से है, उन्हीं से आपका संक्षिप्त परिचय कराने का प्रयास प्रस्तुत है–

5 G Technology :

5 G

तकनीक अब तक की तथा आगामी तकनीकों में सबसे चर्चित तकनीक है। यह तकनीक डाटा प्रोसेसिंग केनए आयाम स्थापित करने को तैयार है। 5G को संचार तकनीक का भविष्य कहा गया है। यह एक वायरलेस संचार तकनीक है। 5जी के सहयोग से वायरस नेटवर्क क्षमता में 1000 गुना वृद्धि होने की संभावना है तथा 100 अरब से ज्यादा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को 10GB प्रति सेकंड डाटा, प्रति उपकरण उपयोगकर्ता की क्षमता से एक समय में क्रियान्वित किया जा सकता है। 5G तकनीक की सबसे विशेष बात इसकी डाटा गति होगी, जो कि 20GB प्रति सेकेंड तक रहने की क्षमता से युक्तहै। यह तकनीक मोबाइल सेवाए इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) एवं विश्वस्तरीय तीव्र गति के वायरलेस नेटवर्क का समन्वय है।

Human Augmentation :

यह वह तकनीक है, जो मानव के अनुभवों का उपयोग करके स्मार्ट उपकरणों द्वारा उसकी संज्ञानात्मक एवं शारीरिक क्षमताओं में सुधार एवं विकास का उपयोग किए जाने से संबंधित है। मानव में यह तकनीक प्रत्यारोपित किए जाने के बाद मानव को उन कार्यों को करने में सक्षमता प्रदान करेगी, जो पहले उसके द्वारा असंभव थी। यह तकनीक भौतिक रूप से पहने जा सकने वाले उपकरणों सहित संज्ञानात्मक संवर्धन करने वाले इम्बेडेड सिस्टम जैसा होगा। यह तकनीक न केवल किसी व्यक्ति के शारीरिक क्षमताव धैर्य को बढ़ाएगी, बल्कि यह मानव की सोचने और बेहतर निर्णय लेने की क्षमता को भी बढ़ाएगी। अत: स्पष्ट शब्दों में कहें तो यह मानव वृद्धि प्रौद्योगिकी है, जो भविष्य में पर्याप्त संभावनाएं रखती है।

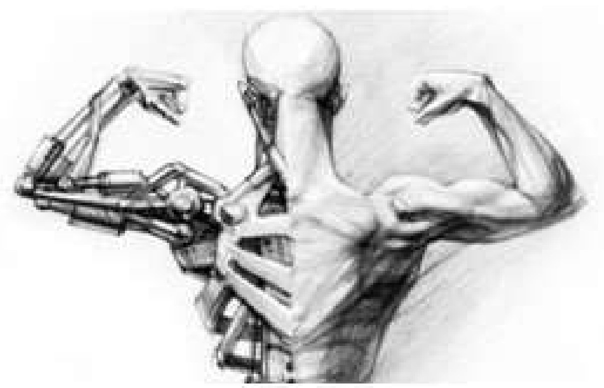

Distributed Cloud

क्लाउड स्टोरेज तकनीकी विश्व में अपने पैर जमा चुकी है और सबसे अधिक प्रयोग में आ रही है। इसकेअगले चरण में डिस्ट्रीब्यूटेड क्लाउड या वितरित क्लाउड तकनीकी द्वारा डाटा स्टोरेज की क्षमता में विकास करने की निश्चित संभावनाएं हैं। यह तकनीक सार्वजनिक क्लाउड को वितरित क्लाउड के माध्यम से जोड़ने का काम करती है। यह उम्मीद है कि वर्ष 2020 केअंत तक उद्योगों के 75 प्रतिशत डाटा केंद्र इस तकनीक काला भलेकर विश्वव्यापी स्तर के हो जाएंगे। वर्ष 2020 की यह तकनीक क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर की महत्वपूर्ण सफलता होगी। वर्तमान में यह तकनीक अपनी प्रारंभिक अवस्था में है तथापि तेजी से उपयोग में लाई जा रही है।

Edge Computing

यह तकनीक मूल रूप से डाटा स्टोरेज एवं डाटा कम्प्यूटेशन के बीच दूरी को कम करने से संबंधित है। आज सभी उद्योगों एवं संस्थान में बेहतर व अचूक प्रबंध अपेक्षित होता हैं।

इसलिए सभी कंप्यूटिंग की प्रतिक्रिया और प्रतिक्रिया दर पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, जो कि डाटा के विश्लेषण के परिणाम पर आधारित है। **Edge** कंप्यूटिंग डाटा स्टोरेज व कम्युनिकेशन की दूरियां कम करके समय बचाता है। साथ ही परिष्कृत परिणाम देता है। जिससे संसाधनों का उचित उपयोग करते जिसे कम लागत पर कार्य निष्पादित किए जाते हैं।

Hyper-automation:

हाइपर ऑटोमेशन कार्य स्वचालन एवं स्वनियंत्रण की प्रौद्योगिकी का उदाहरण है। यह तकनीक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीनलर्निंग (ML) जैसी तकनीकों का अनुप्रयोग है, जो प्रक्रियाओं को स्वचालित एवं स्वनियंत्रित करती है। यह पारंपरिक स्वचालन क्षमताओं की तुलना में अत्यधिक प्रभावशाली है। इस तकनीक की क्रियान्विती के लिए रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन (RPA), प्रोसेसइंटेलिजेंस, कंटेंटइंटेलिजेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आदि इंटीग्रेटेड टेक्नोलॉजी को प्रयोग में लाया जाता है।

यह तकनीक एक से अधिक इंटरफेस व आयामों के साथ कार्य करने से संबंधित है। यह सामान्य द्विविमीय (2D) कंप्यूटर स्क्रीन व की बोर्ड इंटरफेस से कई गुना गतिशील व कई आयामों (2D)का समाहित और कार्य करने का इंटरएक्टिव मंच है। यह तकनीक उन्नत अनुभवों पर आधारित है, जो संवर्धित वास्तविकता(AR) आभासी वास्तविकता (VR), मिश्रित वास्तविकता (MR) multi-channel ह्यूमन मशीन इंटरफेस और सेंसिंग प्रौद्योगिकी का उपयोग करती है। यह निश्चित है कि आने वाले दशक में यह तकनीक मानव सभ्यता का अभिन्न अंग बन जाएगी।

Artificial Intelligence:

वर्तमान समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) सबसे आकर्षक व उपयोग में ली जाने वाली तकनीक है। यह तकनीक मुख्य रूप से कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी का विकसित रूप है, जो डाटा व परिणामों का विशिष्ट संबंधों के आधार पर मानव आदेश के बिना ही कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा नियोजित लाभ और सटीक परिणाम प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अब तक के कंप्यूटर तकनीकों में भविष्य में सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली एवं सबसे प्रचलित तकनीक होने की संभावना रखती है।

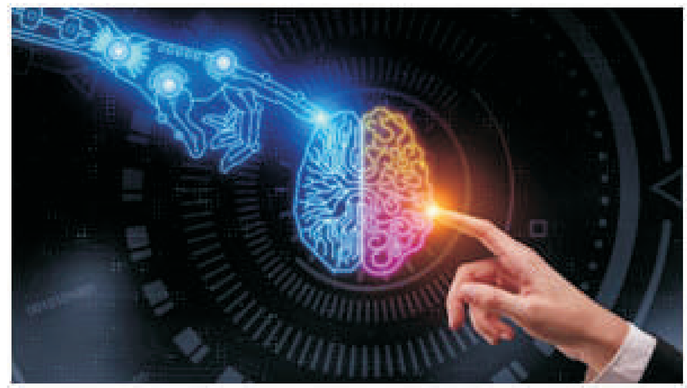

ऑटोनोमसथिंग्सवे भौतिक उपकरण है। जो पहले मानव द्वारा किए गए कार्यों को स्वचालित करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करते हैं। इस तकनीक का वर्तमान मे एवं अधिकांश प्रयोग रोबोट एवं ड्रोन और स्वायत्त वाहन जैसे उपकरणों में किया जा रहा है। ये वो उपकरण है, जो स्वयं संचालित होते हैं। इन उपकरणों का संचालन कठोर प्रोग्रामिंग मॉडल व उन्नत पारिस्थितिक व्यवहार के आधार पर किया जाता है।

जैसे जैसे प्रौद्योगिकी क्षमता में विकास व सुधार होगा। न्यायिक स्थितियां और सामाजिक स्वीकृति के साथ सार्वजनिक स्थानों पर अधिक ऑटो नॉमसथिंग्स उपकरण दिखाई देने लगेंगे। वर्तमान परिवेश की तकनीकों से परिचय का दौर आगे भी जारी रहेगा।

डॉ. संजय गौड़
प्रोफेसर, लेखक साहित्यकार
भवानीनगर, कांकरोली

सावधान! ये लेख मत पढ़ना, वरना परेशान हो जाओगे

आज एक लेख (पोस्ट) पर सवाल किया गया था एलोपैथिक दवाओं के साइड इफेक्ट्स क्यों होते हैं? जाने क्यों मुझे लगा, इसको सोच समझ कर विस्तार से समझना समझाना चाहिए। ये समझ केवल मेरे डॉक्टर होने और एलोपैथिक एवं आयुर्वेदिक दोनों ही तरह की शिक्षा और ईलाज के 45 साल के अनुभव से ही नहीं आई है, बल्कि मेरे सामाजिक सरोकार को लेकर जागरूक रहने और जागरूकता फैलाने से दोनों के साथ होने से हो सकी है।

हम तलवार चाकू छुरी पिस्टल बंदूक को अपनी सुरक्षा अपने कार्य में उचित उपयोग भी कर सकते हैं और इनको किसी को या खुद को नुकसान पहुंचाने को भी इस्तेमाल कर सकते हैं। आपने जानकर किया या बिना जाने किया, मगर गलत ढंग से इस्तेमाल किया तो अंजाम वही होगा। ठीक इसी तरह आपने खुद लापरवाही की या किसी डॉक्टर ने बिना सोचे समझे आपको सलाह दे दी, जो ज़रूरी हर्गिज़ नहीं थी, बात एक ही है। लेकिन डॉक्टर भी आपको दवा लिखते हैं अपनी समझ और राय के अनुसार जो हमेशा सही नहीं भी हो सकती है। अब आपको लगेगा ये तो मैंने उलझन खड़ी कर दी अपनी मर्ज़ी से नहीं और डॉक्टर की सलाह से भी नहीं तो फिर किस तरह निर्णय करें। आपको बाज़ार से अपने लिए जो भी खरीदना होता है, आपकी ज़रूरत को पहले देखते हैं। फिर अपना आंकलन करते हैं कौन किस कसौटी पर खरा है वस्तु भी अच्छी और मूल्य भी उचित हो, ये आपको जीवन के अनुभव समझाते हैं। मगर अपने स्वास्थ्य को लेकर आपने कभी गहराई से विचार किया। समझा कौन डॉक्टर आपको उचित सलाह देता है, आपको कब किस समस्या को लेकर किस पैथी की दवा लेनी चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण ये है कि आप अपने स्वास्थ्य और जीवन का कितना महत्व समझते हैं। मैंने कितनी बार अपनी जान पहचान के लोगों को दोस्तों रिश्तेदारों को कहा है कि आप उपचार जिस किसी से चाहे करवा लेना, मगर कभी भी कोई सेहत संबंधी परेशानी हो मुझे बताना, आपको उचित सलाह देकर मुझे ख़ुशी होगी, फिर भी बहुत बार लोग बाद में बताते हैं या जब देर हो गई तब सलाह लेते हैं। वास्तव में अधिकांश लोग सोचते हैं उनको जानकारी है जो वही बहुत है, मगर उनकी जानकारी होती है शहर में कौनसा डॉक्टर या अस्पताल अच्छा समझा जाता है, जबकि उनके लिए तब की समस्या के लिए मुमकिन है वो सही नहीं हो और कोई बेहतर विकल्प हो।

हमारे देश की सरकार का तौर तरीका स्वास्थ्य और शिक्षा को लेकर कभी भी तार्किक और वास्तविक मकसद को समझकर उचित होता नहीं है। बल्कि अब तो सरकार इसको लेकर उदासीन और हद से अधिक बेपरवाह हो गई है। अभी कोरोना की समस्या को लेकर भी उसकी जानकारी समझ और निर्णय आधी अधूरी ही नज़र आई है।

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

व्यंग

ये विडंबना है कि आधुनिक समय में स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर कोई साफ नियम और कानून अमल में नहीं लाए जाते हैं। जिस तरह की कड़ी व्यवस्था नागरिक की जान की सुरक्षा को जानकर होनी चाहिए है, नहीं और राज्य की सरकारें। कुछ लोगों के दबाव में सालों से बने नियम कानून भी लागू नहीं करती हैं। ऐसे में आम नागरिक को नहीं मालूम सही क्या है, गलत क्या है। कारण ये है कि हमारी विधायिका, संसद, विधानसभा इसको लेकर संवेदनशील नहीं है और कई राजनेताओं के स्वार्थ जुड़े हुए हैं, जो निजी शिक्षा संस्थान और नर्सिंग होम या मेडिकल कॉलेज का कारोबार करते हैं। जब इसके साथ सरकारी अधिकारी और विभाग भी शामिल हो जाते हैं, तब मिल बांटकर खाने की आदत से शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे विषय भी महत्वहीन समझे जाते हैं।

इसका मुख्य कारण राजनेताओं, अधिकारी वर्ग और धनवान लोगों को ये सब आसानी से उपलब्ध होना है। उनको इस बात की कल्पना तक नहीं है कि उनके अपना कर्तव्य नहीं निभाने से जाने कितने लोग ऐसी व्यवस्था का शिकार होकर बदहाल और मौत आने से पहले मौत के शिकार हो जाते हैं, समय पर उपचार नहीं मिलने या पैसे नहीं होने से।

कुछ समय पहले एक सर्वेक्षण में चौंकने वाली बात सामने आई थी। जो बड़े बड़े पांचतारा नर्सिंग होम अस्पताल लाखों रुपए का बिल लेते हैं। हज़ारों रुपए डॉक्टर की फीस होती है, उनकी लिखी पर्ची पर हजारों रुपए जांच पर खर्च करवाने के बाद भी निदान नहीं लिखा हुआ था। साफ साफ, अधिकतर में रोग के नाम से पहले सवालिया निशान ? लगा हुआ था, जिसका अर्थ होता है, ये संभावित है पक्का नहीं। सर्वेक्षण करने वाले अंदाजा नहीं लगा सकते है कि जब बड़े बड़े अस्पताल की ये हालत है, तो नीचे क्या नहीं होता होगा। आपने देखा मीडिया, टीवी चैनल पर कोई अंकुश नहीं अभिव्यक्ति की आज़ादी के नाम पर विशेषाधिकार की तलवार लेकर सच के रखवाले सच को ही क़त्ल कर रहे हैं। बिकना नहीं है ये नागरिक के अधिकारों का हनन करने की सुपारी लेने जैसा अपराध है। जनता की समस्याओं को छिपाना सत्ता और धनवान लोगों की महिमा का गुणगान करना पैसे विज्ञापन के लालच में जिसे रिश्वत कहना उपयुक्त होगा। यही सरकार ने शिक्षा स्वास्थ्य सेवाओं को लूट का माध्यम बनाने वालों पर कोई निगरानी नहीं रखने का काम किया है। सही मायने में सांसदों- विधायकों सभी दलों को सत्ता का खेल और बहुमत का गणित छोड़ कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं लगता है। सत्ता ही ध्येय भी है और ईमान भी और राजनीति का मकसद भी, देश जनता की कोई कल्याण की बात ही नहीं है।

आपने शोर सुना होगा, आयुर्वेद और योग को लेकर, इसमें खुली अंधेरगर्दी है। पैसा बनाने को जिनका आयुर्वेद से कोई सरोकार नहीं, कोई रोग की उपचार की समझ नहीं बाजार लगाए कारोबार कर रहे हैं। मगर आपको बीमारी की दवा नहीं गोरेपन की मोटापे की सुंदरता की कब्ज की अन्य तमाम ऐसी बातों को लेकर जिन के लिए किसी क्वॉलिफाइड डॉक्टर की राय नहीं इश्तिहार से उनका उत्पाद खरीदना है। क्योंकि आपको फिल्मी सितारे खिलाड़ी विज्ञापन देते दिखाई देते हैं। आपको उनका झूठ सच लगता है। यकीन करें वो लोग खुद कभी इनका उपयोग नहीं करते आपकी जान आपका पैसा उनकी आमदनी का जरिया है। कुछ इसी तरह हम ने ज़िंदगी में आने वाली समस्याओं और हालात व सामान्य जीवन की जरूरतों को लेकर कभी कोई समझ कोई सोच विकसित नहीं की है, तभी कदम कदम पर हम बेबस होकर किसी न किसी के जाल में किसी के चंगुल में फंसे होते हैं। किताबी शिक्षा के साथ हमको वास्तविक जीवन की बातों समस्याओं और तौर तरीकों को भी जानना चाहिए।

डॉ. लोक सेतिया
वरिष्ठ चिकित्सक व लेखक
फतेहाबाद, हरियाणा

फोकट री वातां

एक देस रा मनख घणा होरा हा। वठे कोई भूखो तरस्यो नी रैवतो अणभण्यां रो तो जाणे टोटो हो। वणी देस रौ काम काज घणौ आछौ चालतो। नौकरी- चाकरी, खेती- वाड़ी 'ने वौपार रौ काम देसां देसां में जाण्यो जातो। आपणे देस रा दो ठाबका- ठाबका मंत्र्या ने आ जाणकारी करवा खातर वणी देस में भेज्या के असी कांई वातां है, वठे पतो करी ने आवो। आपणा देस में वणीज भांत काम करणो चावा। वा सा, दो मंतरी वणी देस में पूगा। सब सूं पेल्यां वठा रा भणाई- पढ़ाई रा मेकमा रा मंतरीऊं मल्या। आंपणी ओळख- पेचाण कराई ने काम काज री जाणकारी करवा बैठ्या। वणां देख्यो के वठा रा मंतरी पोथ्यां री थड़यां वणाई राखी है। एक पौथी परे दूजी ने दूजी परे तीजी मेली राखी ही। कदी पौथी चावती तो थड़ी सूं खेचता ने थड़ी धबाक् देती री नीचे परी पड़ती, वणी ने पाछी चणता। दूजी थड़ी सूं फेर पौथी खेंचता ने लावता ने थड़ी फेर पड़ी जावती। वणी ने पाछी चणता...। आपांरा मंत्र्यां ने घणी आछी- आछी वातां वताई। खास वातां तो वणां हुंणी-अणहुंणी कीदी पण पौथ्यां री थड़यां देखी ने पूछयौ- थां अणां पोथ्यां ने आड़ी क्यूं नी मेलो? नी तो पड़े नी फाटे- टूटे। अर थांने हेंगधार चणनी कोनी पड़े। वठा रा मंतरी बोळ्या के सा, ऐ म्हारी पौथ्यां है, म्हारी मरजी व्हे ज्यूं राखूं थारै अणीऊं कई लेणो देणो? मंत्र्यां होच्यो के आपां तो अणारे भलाई री वात वताई, अणाने आसे नी आई तो रेवा दो अठऊं दूजा कने चालां।

अबे व्हे दूजा मंतरी कने ग्या। वठे वणां देख्यो के सोळा कुरसिया वणां लटकाई राखी ही। अणां ने देखी ने वे मंतरी उठया ने डोरी ढीली करी ने दो कुरसियां नीचे उतारी। अणीऊं पेल्यां एक मनख वठे बैठ्यो हो, वणी रे जातांईन् वणां कुरसी पाछी ऊपरे चढ़ाई दीदी नै आंपणे देस रे मंत्र्यां वातां करवा लागा। थोड़ी दांण में दो दूजा मनख वठे आया। मंतरी पाछा उठ्या, दो कुरसियां नीचे उतारी ने वणां ने बैठाया। वणां रे जायां पछे दोई कुरसियां पाछी ऊपरे करी नांकी।

अणी भांत वे वातां करता- करता उठता ने कुरसियां ठकाणे करता रेवता आ वात देखी ने आपणां मंतरी बोल्या- थांरो सगळो काम घणो आछो है, पण ऐ कुरस्यां नीचे ईज पड़ी राखो तो चोखो रेवे। एक दांण नीचे उतारो ने पाछी ऊपरे चढ़ावो। आखो दन यूं करणो तो आछो नी लागे। वणां कियो- देखो सां, ये कुरस्यां म्हारी है। अबे अणांने म्हुं ऊपरे राखूं के नीचे मेलूं, अणीऊं थारे कांई पीड़ा है? दोई मंतरी फेजू अशी वात हुंणी ने एक दूजा रो मुंडो देख्यो ने वठऊं आगे चालता वण्यां। अबे व्हे वणी देस रा खास मंतरीसूं (प्रधानमंत्री) मिलवा वणा रे रेवास माथे पूगा। वठे वणा रो मान कीदो। ओळख- पेचाण कर्‌यां पछे वातां करवा लागा। आंपणे देस रा मंतरी बोल्या के आपरे देस रो राजकाज ने काम घणो आछो लागो, पण आप रे एक मंतरी पोथ्यां री ढंगल्या (थड़या) वणाई ने मेली राखी ही, म्हां वणां ने रा दीदी के अणां पोथ्यां ने आड़ी राखो तो ऐ नीचे नी पड़ेला ने पाछी चणनी कोनी पड़े। व्हे ऊपड़तांई बोल्या के म्हारी पोथ्यां है, आड़ी मेलूं के ऊबी थारे केई लेणो देणो? जदी म्हां दूजा मंतरी कने गिया तो वठे वणां कुरसियां ऊपरे लटकाई ने राखी ही। म्हां वणां ने पूछ्यो के कुरस्यां ऊपरे क्यूं लटकाई ने राखो, नीचे पड़ी राखो तो चोखो रे वे तो वणाई कियो के ऐ म्हारी कुरसियां है, अणाने ऊपरे राखूं के नीचे थारे कांई पीड़ा है? तो वठा रा खास मंतरी बोल्या के सा व्हे दोई मंतरी मूरख है। आ वात हुंणी ने आपणां मंतरी घणा राजी विया ने पूछ्यो तो थे अणाने मंतरी वणाऊं के नी वणाऊं आ म्हारी मरजी है, थांरे कई करणो है? आगे ओजू कियो-थांरी वाता सूं तो म्हाने आ ठा पड़े के थांरे देस रा मनख काम थोड़ो ने फोकटी वातां वती करे। दोई मंत्री परदेस में आंपणो माजनो वगड़ाई ने पाछा आया।

जवानसिंह सिसोदिया
वरिष्ठ साहित्यकार, नाथद्वारा
मो. 98286-66953

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी

होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा, मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।

दिलीप जैन

मो. 9214384205 9602997715

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

जयवर्द्धन

की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में

करें कॉल : 94142-39648

An ISO -9001:2015

M. 9829445469, 9929495228

शाईन कम्प्यूटर्स

RKCL

IT shapes future

(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

C.F.A (Tally)

पूर्ण व्यवसायिक कोर्स

GST/Tally ERP

SHiNE

RS-CIT | Tally पूर्ण व्यवसायिक कोर्स | DCA | PGDCA | PDCA | Spoken English

राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान

शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469

शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

सुभाष पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल

हाउसिंग बोर्ड धोइन्दा, रेलमगरा, पुठोल (राजसमंद)

SUBHASH SHIKSHAN SANSTHAN DHOINDA Distt. Rajsamand
Vidhya Dadati Vinayam

Ph: 02952-220403,M.94604 46756, 9414173503
Email : sps.dhoinda@gmail.com

12TH SCIENCE | **12TH COM.**

Prince Dave
94.80%
(Hindi Medium)
Physics - 100/100

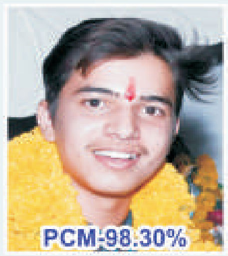

Kishan Kumawat
94.60%
(English Medium)
Physics - 100/100

Divya Kumawat
91.40%
(Hindi Medium)

Shiv Narayan
89.60%
(Hindi Medium)

Anjana Khatik
93.00%
(Hindi Medium)

आवश्यकता दोनो माध्यम

व्याख्याता

विज्ञान, वाणिज्य एवं कला वर्ग सभी विषय

वरिष्ठ अध्यापक

सभी विषय अध्यापक टीजीटी सभी विषय
पीटीआई, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी,
ड्राइवर की आवश्यकता है।

10TH CLASS

Bhupendra Kumawat
94.00%
(Hindi Medium)

Bhavesh Ameta
93.17%
(Hindi Medium)

Harsh Paliwal
89.33%
(Hindi Medium)

साक्षात्कार : दिनांक 25 जून 2020, गुरुवार को प्रातः 10 बजे से हाउसिंग बोर्ड राजसमंद विद्यालय में रखा गया है आशार्थी प्रार्थना पत्र के साथ शैक्षणिक प्रशैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक प्रमाण पत्रों की स्वप्रमाणिक छायाप्रति कार्यालय समय प्रातः 9 से 2 बजे तक जमा कराएं।

प्रवेश प्रारम्भ नर्सरी से 12वीं तक
(कला, वाणिज्य व विज्ञान वर्ग)
हिन्दी व अंग्रेजी (दोनों माध्यम)
आर टी ई के तहत 25% निःशुल्क प्रवेश

वाहन सुविधा | **छात्रावास सुविधा**

हमारा विश्वास, हर विद्यार्थी है, हमारे लिए खास

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला–राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To